

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٥﴾									
75	सब्र	मेरे साथ	हरगिज़ न कर सकेगा	वेशक तू	तुझ से	मैं ने कहा	क्या नहीं	उस ने कहा	
قَالَ إِنْ سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَحِّبْنِي ۚ قَدْ بَلَغْتَ									
अलवत्ता तुम पहुँच गए		तो मुझे अपने साथ न रखना		इस के बाद		किसी चीज़ से		मैं तुम से पूछूँ	
مِنْ لَّدُنِّي عَذْرًا ﴿٧٦﴾ فَانْطَلَقَا ۚ حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا									
दोनों ने खाना मांगा		एक गावँ वालों के पास		जब वह दोनों आए		यहां तक कि		फिर वह दोनों चले	
						76		उज़र को	
أَهْلَهَا فَابْتَدَأُوا أَنْ يُصَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ									
वह चाहती थी		उस में (वहां) एक दीवार		फिर उन्होंने ने पाई (देखी)		वह उन की ज़ियाफत करें		तो उन्होंने ने इन्कार कर दिया कि	
أَنْ يَنْقُصَ فَاقَامَهُ ۚ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ﴿٧٧﴾ قَالَ									
उस ने कहा		77		उज़रत		उस पर		ले लते	
						अगर तुम चाहते		उस ने कहा	
هَذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ									
उस पर		तुम न कर सके		जो		तावीर		अब तुम्हें बताएँ देता हूँ	
						और तुम्हारे दरमियान		मेरे दरमियान	
صَبْرًا ﴿٧٨﴾ أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ									
दर्या में		वह काम करते थे		ग़रीब लोगों की		सो वह थी		किशती	
						रही		78	
فَارْدَتْ أَنْ أَعْيِبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ									
हर किशती		वह पकड़ लेता		एक बादशाह		उन के आगे		और था	
						मैं उसे ऐवदार कर हूँ		कि	
غَضَبًا ﴿٧٩﴾ وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا									
कि उन्हें फंसादे		सो हमें अन्देशा हुआ		दोनों मोमिन		उस के माँ बाप		तो थे	
						लड़का		और रहा	
						79		ज़बरदस्ती	
طُغْيَانًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾ فَارْدْنَا أَنْ يُبَدِّلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَاةً									
पाकीज़गी		उस से		बेहतर		उन का रब		कि बदला दे उन दोनों को	
								पस हम ने इरादा किया	
						80		और कुफ़ में	
وَأَقْرَبَ رُحْمًا ﴿٨١﴾ وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ									
दो यतीम		दो (2) बच्चों की		सो वह थी		दीवार		और रही	
								81	
فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزُ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا ۚ فَأَرَادَ									
सो चाहता कि		नेक		उन का बाप और था		उन दोनों के लिए		खज़ाना	
						उस के नीचे		और था	
رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ۚ رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ ۚ									
से तुम्हारा रब		मेहरबानी		अपना खज़ाना		और वह दोनों निकालें		अपनी जवानी	
								कि वह पहुँचें	
وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾									
82		सब्र		उस पर		तुम न कर सके		जो	
						तावीर (हकीकत)		यह	
						अपना हुक़म (मरज़ी)		से	
وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقُرْنَيْنِ ۚ قُلْ سَأَتْلُوا عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾									
83		कुछ हाल		उस से-का		तुम पर-सामने		अभी पढ़ता हूँ	
						फ़रमा दें		जुलक़रनैन	
								से (बावत)	
और आप (स) पूछते हैं									

ख़िज़्र (अ) ने कहा कि क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा था कि तू मेरे साथ हरगिज़ सब्र न कर सकेगा? (75) मूसा (अ) ने कहा अगर इस के बाद मैं तुम से किसी चीज़ से (मुतअल्लिक) पूछूँ तो मुझे अपने साथ न रखना, अलवत्ता तुम मेरी तरफ़ से पहुँच गए हो (हदे) उज़र को। (76) फिर वह दोनों चले यहां तक कि एक गावँ वालों के पास आए, उन्होंने ने उस के वाशिन्दों से खाना मांगा तो उन्होंने ने इन्कार कर दिया उन की ज़ियाफत करने से, फिर उन्होंने ने वहां एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी तो ख़िज़्र (अ) ने उसे सीधा कर दिया, मूसा (अ) ने कहा अगर तम चाहते तो उस पर तम उज़रत ले लते। (77) उस ने कहा यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई है! अब मैं तुम्हें तावीर (हकीक़ते हाल) बताएँ देता हूँ जिस पर तुम सब्र न कर सके। (78) रही किशती! सो वह चन्द ग़रीब लोगों की थी जो दर्या में काम (मेहनत मज़दूरी) करते थे और उन के आगे एक बादशाह था जो हर (अच्छी) किशती को ज़बरदस्ती पकड़ लेता (छीन लेता) था, सो मैं ने चाहा कि उसे ऐवदार कर दूँ। (79) और रहा लड़का! तो उस के माँ बाप दोनों मोमिन थे, सो हमें अन्देशा हुआ कि वह उन्हें सरकशी और कुफ़ में न फंसादे। (80) वस हम ने इरादा किया कि उन दोनों को उन का रब बदला दे (जो पाकीज़गी) में उस से बेहतर और शफ़क़त में बहुत ज़ियादा करीब हो। (81) और रही दीवार! सो वह थी शहर के दो (2) यतीम बच्चों की, और उस के नीचे उन दोनों के लिए खज़ाना है, और उन का बाप नेक था, सो तुम्हारे रब ने चाहा कि वह अपनी जवानी को पहुँचें तो वह दोनों तुम्हारे रब की रहमत से अपना खज़ाना निकालें, और यह मैं ने नहीं किया अपनी मरज़ी से, यह है (वह) हकीक़त! जिस पर तुम सब्र न कर सके। (82) और वह आप (स) से पूछते हैं जुलक़रनैन की बावत, फ़रमा दें, मैं तुम्हारे सामने अभी उस का कुछ हाल पढ़ता (बयान करता हूँ)। (83)

वेशक हम ने उस को ज़मीन में कुदरत दी और हम ने उसे हर शौ का सामान दिया था। (84)

सो वह एक सामान के पीछे पड़ा, (85)

यहां तक कि वह सूरज के गुरुब होने के मुक़ाम पर पहुँचा, उस ने उसे पाया (देखा) कि वह दलदल की नदी में डूब रहा है, और उस के नज़दीक उस ने एक कौम पाई, हम ने कहा ऐ जुलकरनैन! (तुझे इख़्तियार है) चाहे तू सज़ा दे, चाहे उन से कोई भलाई इख़्तियार करे। (86)

उस ने कहा, अच्छा! जिस ने जुल्म किया तो जल्द हम उसे सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की तरफ़ लौटाया जाएगा तो वह उसे सख़्त अज़ाव देगा। (87)

और अच्छा! जो ईमान लाया और उस ने अमल किए नेक, तो उस के लिए बदला है भलाई, और अनक़रीब हम उस के लिए अपने काम में आसानी (की बात) कहेंगे। (88)

फिर वह एक (और) सामान के पीछे पड़ा। (89)

यहां तक कि जब वह सूरज के तुलूअ होने के मुक़ाम पर पहुँचा तो उस को पाया (देखा) कि वह एक ऐसी कौम पर तुलूअ हो रहा है जिन के लिए हम ने उस (सूरज) के आगे नहीं बनाया था कोई पर्दा (ओट)। (90)

यह है (हकीक़त) और जो कुछ उस के पास था उसकी ख़बर हमारे अहाता-ए-इल्म में है। (91)

फिर वह (एक और) सामान के पीछे पड़ा। (92)

याह तक कि जब वह पहुँचा दो पहाड़ों के दरमियान, उस ने उन दोनों के बीच में एक कौम पाई, वह लगते न थे कि कोई बात समझें। (93)

अन्हों ने कहा ऐ जुलकरनैन!

वेशक याजूज और माजूज ज़मीन में फ़सादी है तो क्या हम तेरे लिए (जमा) कर दें कुछ माल? ता कि हमारे और उन के दरमियान एक दीवार बना दे। (94)

उस ने कहा जिस पर मुझे मेरे रब ने कुदरत दी वह बेहतर है, पस तुम मेरी मदद करो कुव्वते (बाजू) से, मैं तुम्हारे और उन के दरमियान एक आड़ बना दूँगा। (95)

मझे लोहे के तख़्ते ला दो, यहां तक कि जब उस ने बराबर कर दिया दोनों पहाड़ों के दरमियान, उस ने कहा (अब) धोको, यहां तक कि जब (धोकर) उसे आग कर दिया, उस ने कहा मेरे पास लाओ कि मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डालूँ, (96)

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۚ فَاتَّبَعِ

सो वह पीछे पड़ा	84	सामान	हर शौ	से	और हम ने उसे दिया	ज़मीन में	उस को	वेशक हम ने कुदरत दी
-----------------	----	-------	-------	----	-------------------	-----------	-------	---------------------

سَبَبًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ

चश्मा-नदी	में	डूब रहा है	उस ने पाया उसे	सूरज	गुरुब होने का मुक़ाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	85	एक सामान
-----------	-----	------------	----------------	------	----------------------	--------------	------------	----	----------

حَمِيَّةٍ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ۚ قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِمَّا اَنْ

यह कि	या-चाहे	ऐ जुलकरनैन	हम ने कहा	एक कौम	उस के नज़दीक	और उस ने पाया	दलदल
-------	---------	------------	-----------	--------	--------------	---------------	------

تُعَذِّبَ وَاِمَّا اَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا ۚ قَالَ اَمَّا مَنْ ظَلَمَ

जिस ने जुल्म किया	अच्छा	उस ने कहा	86	कोई भलाई	उन में-से	तू इख़्तियार करे	यह कि	और या चाहे	तू सज़ा दे
-------------------	-------	-----------	----	----------	-----------	------------------	-------	------------	------------

فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ اِلٰى رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُّكَرًا ۚ وَاَمَّا مَنْ

जो और अच्छा	87	बड़ा-सख़्त	अज़ाव	तो वह उसे अज़ाव देगा	अपने रब की तरफ़	वह लौटाया जाएगा	फिर	हम उसे सज़ा देंगे	तो जल्द
-------------	----	------------	-------	----------------------	-----------------	-----------------	-----	-------------------	---------

اٰمَنَ وَعَمِلَ صٰلِحًا فَلَهٗ جَزَآءٌ اِلْحُسْنٰى ۚ وَسَنُقُوْلُ لَهُ مِنْ اٰمِرِنَا

अपना काम	मुतअख़िक्	उस के लिए	और अनक़रीब हम कहेंगे	भलाई	बदला	तो उस के लिए	नेक	और उस ने अमल किया	ईमान लाया
----------	-----------	-----------	----------------------	------	------	--------------	-----	-------------------	-----------

يُسْرًا ۚ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ۚ حَتَّىٰ اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ

तुलूअ हो रहा है	उस ने उस को पाया	सूरज	तुलूअ होने का मुक़ाम	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	89	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर	88	आसानी
-----------------	------------------	------	----------------------	--------------	------------	----	----------	--------------	-----	----	-------

عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ۚ كَذٰلِكَ ۚ وَقَدْ اَحْطٰنَا

और हमारे अहाते में है	यही	90	कोई पर्दा	उस के आगे	उन के लिए	हम ने नहीं बनाया	एक कौम पर
-----------------------	-----	----	-----------	-----------	-----------	------------------	-----------

بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ۚ ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ۚ حَتَّىٰ اِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَيْنِ

दो दीवारों (पहाड़)	दरमियान	जब वह पहुँचा	यहां तक कि	92	एक सामान	वह पीछे पड़ा	फिर	91	अज़ रूप ख़बर	जो कुछ उस के पास
--------------------	---------	--------------	------------	----	----------	--------------	-----	----	--------------	------------------

وَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمَا قَوْمًا ۚ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ قَوْلًا ۚ قَالُوْا

अन्हों ने कहा	93	कोई बात	वह समझें	नहीं लगते थे	एक कौम	दोनों के बीच	उस ने पाया
---------------	----	---------	----------	--------------	--------	--------------	------------

يٰذَا الْقَرْنَيْنِ اِنَّ يَاجُوجَ وَمَاجُوجَ مُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ فَهَلْ

तो क्या	ज़मीन में	फ़साद करने वाले (फ़सादी)	और माजूज	याजूज	वेशक	ऐ जुलकरनैन
---------	-----------	--------------------------	----------	-------	------	------------

نَجْعَلْ لَكَ خَرْجًا عَلٰى اَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًا ۚ قَالَ

उस ने कहा	94	एक दीवार	और उन के दरमियान	हमारे दरमियान	कि तू बनादे	पर-ताकि	कुछ माल	तेरे लिए	हम कर दें
-----------	----	----------	------------------	---------------	-------------	---------	---------	----------	-----------

مَا مَكَّنٰى فِيْهِ رَبِّىْ خَيْرٌ فَاَعِيْزُوْنِىْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ

और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान	मैं बना दूँगा	कुव्वत से	पस तुम मेरी मदद करो	बेहतर	मेरा रब	उस में	जिस पर कुदरत दी मुझे
------------------	------------------	---------------	-----------	---------------------	-------	---------	--------	----------------------

رَدْمًا ۚ اَتُوْنِىْ زُبْرَ الْحَدِيْدِ حَتَّىٰ اِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ

उस ने कहा	दोनों पहाड़	दरमियान	उस ने बराबर कर दिया	जब	यहां तक कि	लोहे के तख़्ते	मुझे ला दो तुम	95	मज़बूत आड़
-----------	-------------	---------	---------------------	----	------------	----------------	----------------	----	------------

اَنْفُخُوْا حَتَّىٰ اِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۚ قَالَ اَتُوْنِىْ اُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ۚ

96	पिघला हुआ तांबा	उस पर	मैं डालूँ	ले आओ मेरे पास	उस ने कहा	आग	जब उसे कर दिया	याहां तक कि	धोको
----	-----------------	-------	-----------	----------------	-----------	----	----------------	-------------	------

فَمَا اسْتَطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ﴿٩٧﴾ قَالَ									
उस ने कहा	97	नक़ब	उस में	और वह न लगा सकेंगे	उस पर चढ़ें	कि	फिर न कर सकेंगे		
هَذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَبِّيَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّيَ جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۚ وَكَانَ									
और है	हमवार	उस को कर देगा	मेरा रब	वादा	आएगा	पस जब	मेरे रब से	रहमत	यह
وَعْدُ رَبِّيَ حَقًّا ﴿٩٨﴾ وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ									
वाज़ (दूसरे) के अन्दर	रेला मारते	उस दिन	उन के वाज़	और हम छोड़ देंगे	98	सच्चा	मेरा रब	वादा	
وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾ وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَافِرِينَ									
काफ़िरों के	उस दिन	जहन्नम	और हम सामने कर देंगे	99	सब को	फिर हम उन्हें जमा करेंगे	और फूँका जाएगा सूर		
عَرَضًا ﴿١٠٠﴾ الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنِ ذِكْرِي وَكَانُوا									
और वह थे	मेरा ज़िक्र	से	पर्दे में	उन की आँखें	थी	वह जो कि	100	विलकुल सामने	
لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ﴿١٠١﴾ أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا									
कि वह बना लेंगे	वह जिन्होंने ने कुफ़ किया			क्या गुमान करते हैं	101	सुनना	न ताक़त रखते		
عِبَادِي مِّنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِّلْكَافِرِينَ نُزْلًا ﴿١٠٢﴾									
102	ज़ियाफ़त	काफ़िरों के लिए	जहन्नम	हम ने तैयार किया	वेशक हम	कारसाज़	मेरे सिवा	मेरे बन्दे	
قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ									
उन की कोशिश	बरबाद हो गई	वह लोग	103	आमाल के लिहाज़ से	बदतरनीन घाटे में	हम तुम्हें बतलाएं	क्या	फरमा दें	
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾ أُولَٰئِكَ									
यही लोग	104	काम	अच्छे कर रहे हैं	कि वह	खयाल करते हैं और वह	दुनिया की ज़िन्दगी	में		
الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيمُ									
पस हम काइम न करेंगे	उन के अमल (जमा)	पस अकारत गए	और उस की मुलाक़ात	अपना रब	आयतों का	जिन लोगों ने इन्कार किया			
لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَزَنًا ﴿١٠٥﴾ ذَلِكَ جَزَاؤُهُمْ جَهَنَّمَ بِمَا كَفَرُوا									
उन्होंने ने कुफ़ किया	इस लिए कि	जहन्नम	उन का बदला	यह	105	कोई वज़न	कियामत के दिन	उन के लिए	
وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُورًا ﴿١٠٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا									
जो लोग ईमान लाए			वेशक	106	हँसी मज़ाक़	और मेरे रसूल	मेरी आयात	और ठहराया	
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزْلًا ﴿١٠٧﴾ خَالِدِينَ فِيهَا									
उस में	हमेशा रहेंगे	107	ज़ियाफ़त	फ़िरदौस के बागात	उन के लिए	है	और उन्होंने ने नेक अमल किए		
لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حَوْلًا ﴿١٠٨﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمَاتِ رَبِّي									
मेरा रब	वातों के लिए	रोशनाई	समन्दर	हो	अगर	फरमा दें	108	जगह बदलना	वहां से वह न चाहेंगे
لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾									
109	मदद को	उस जैसा	हम ले आएँ	और अगरचे	मेरे रब की बातें	कि ख़त्म हो	पहले	तो ख़त्म हो जाए समन्दर	

फिर वह (याज़ूज माज़ूज) न उस पर चढ़ सकेंगे, और न उस पर नक़ब लगा सकेंगे। (97)

उस ने कहा यह मेरे रब की (तरफ़) से रहमत है, पस जब आएगा मेरे रब का वादा (मक़ररा वक़्त) वह उस को हमवार कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (98)

और हम छोड़ देंगे उन के वाज़ को उस दिन रेला मारते हुए एक दूसरे के अन्दर, और सूर फूँका जाएगा, फिर हम उन सब को जमा करेंगे। (99)

और हम उस दिन जहन्नम सामने कर देंगे काफ़िरों के बिलकुल सामने। (100)

और मेरे ज़िक्र से जिन की आँखें पर्दा-ए-(गफ़लत) में थीं, वह सुनने की ताक़त न रखते थे (सुन न सकते थे)। (101)

जिन लोगों ने कुफ़ किया, क्या वह गुमान करते हैं? कि वह मेरे बन्दों को बना लेंगे मेरे सिवा कारसाज़। वेशक हम ने तैयार किया जहन्नम को काफ़िरों की ज़ियाफ़त के लिए। (102)

फरमा दें क्या हम तम्हें बतलाएँ आमाल के लिहाज़ से बदतरनीन घाटे में (कौन हैं)! (103)

वह लोग जिन की वरबाद हो गई कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में, और वह खयाल करते हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं। (104)

यही लोग हैं जन्होंने ने इन्कार किया अपने रब की आयतों का और उस की मुलाक़ात का, पस अकारत गए उन के अमल, पस क़ियामत के दिन उन के लिए कोई वज़न काइम न करेंगे (उन के अमल वे वज़न होंगे)। (105)

यह उन का बदला है जहन्नम, इस लिए कि उन्होंने ने कुफ़ किया और मेरी आयतों को और मेरे रसूलों को हैंसी मज़ाक़ ठहराया। (106)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए उन के लिए ज़ियाफ़त है फ़िरदौस (बहिश्त) के बागात। (107)

उन में हमेशा रहेंगे, वह वहाँ से जगह बदलना न चाहेंगे। (108)

फरमा दें अगर समन्दर मेरे रब की बातें (लिखने के लिए) रोशनाई बन जाए तो समन्दर (का पानी) ख़तम हो जाएगा उस से पहले कि मेरे रब की बातें ख़तम हों अगरचे हम उस की मदद को उस जैसा (और समन्दर भी) ले आएँ। (109)

आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम जैसा बशर हूँ (अलबत्ता) मेरी तरफ़ वहि की जाती है, तुम्हारा माबूद माबूदे वाहिद है, सो जो अपने रब की मुलाकात की उम्मीद रखता है उसे चाहिए कि वह अच्छे अमल करे और वह अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे। (110) अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है काफ़-हा-या-ऐन-साद। (1) यह तज़क़िरा है तेरे रब की रहमत का, उस के बन्दे ज़क़रिया (अ) पर। (2) (याद करो) जब उस ने अपने रब को आहिस्ता से पुकारा। (3) उस ने कहा ऐ मेरे रब! वेशक (बुढ़ापे से) मेरी हड्डियाँ कमज़ोर हो गई हैं, और मेरा सर सफ़ेद वालों से शोले मारने लगा है (बिलकुल सफ़ेद हो गया) और मैं (कभी) तुझ से मांग कर ऐ मेरे रब महरूम नहीं रहा हूँ। (4) और अलबत्ता मैं अपने बाद अपने रिश्तेदारों से डरता हूँ, और मेरी वीवी बाँझ है, तू मुझे अ़ता फ़रमा अपने पास से एक वारिस। (5) वह वारिस हो मेरा और औलादे याकूब (अ) का, और ऐ मेरे रब! उसे पसंदीदा बना दे। (6) (इरशाद हुआ) ऐ ज़क़रिया (अ)! वेशक हम तुझे एक लड़के की बशारत देते हैं, उस का नाम यहया (अ) है। हम ने इस से क़व्ल किसी को उस का हम नाम नहीं बनाया। (7) उस ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि मेरी वीवी बाँझ है, और मैं पहुँच गया हूँ बुढ़ापे की इन्तिहाई हद को। (8) उस ने कहा उसी तरह, तेरा रब फ़रमाता है, यह (अमर) मुझ पर आसान है, और इस से क़व्ल मैं ने तुझे पैदा किया, जब कि तू कुछ भी न था। (9) उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लिए कोई निशानी (मक़रर) कर दे, फ़रमाया तेरी निशानी (यह है) कि तू लोगों से बात न करेगा तीन रात (दिन) ठीक (होने के बावजूद)। (10) फिर वह मेहरावे (इबादत) से अपनी क़ौम के पास निकल कर (आया) तो उस ने उन की तरफ़ इशारा किया कि उसकी पाकीज़गी बयान करो सुबह ओ शाम। (11)

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُمُ إِلَهُ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ											
हो	सो जो	वाहिद	माबूद	तुम्हारा माबूद	फकत	मेरी तरफ	वहि की जाती है	तुम जैसा	बशर	इस के सिवा नहीं कि मैं	फरमा दें
يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ﴿١١٠﴾											
110	किसी को	अपना रब	इबादत में	और वह शरीक न करे	अच्छे	अमल	तो उसे चाहिए कि वह अमल करे	अपना रब	मुलाकात	उम्मीद रखता है	
آيَاتُهَا ٩٨ ﴿١٩﴾ سُورَةُ مَرْيَمَ ﴿٦﴾ زُكُوعَاتُهَا ٦											
रुकुआत 6			(19) सूरह मरयम					आयात 98			
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ											
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है											
كَهَيِّصَ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهُ زَكْرِیَّا ﴿٢﴾ اِذْ نَادَى رَبَّهُ											
अपना रब	उस ने पुकारा	जब	2	ज़क़रिया (अ)	अपना बन्दा	तेरा रब	रहमत	तज़क़िरा	1	काफ़ हा या ऐन साद	
نِدَاءً خَفِیًّا ﴿٣﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ											
सर	और शोले मारने लगा	मेरी	हड्डियां	कमज़ोर हो गई	वेशक मैं	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	3	आहिस्ता से	पुकारना	
شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِیًّا ﴿٤﴾ وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِیَ											
अपने रिश्तेदार	डरता हूँ	और अलबत्ता मैं	4	महरूम	ऐ मेरे रब	तुझ से मांग कर	और मैं नहीं रहा	सफ़ेद बाल			
مِنْ وَرَائِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلِیًّا ﴿٥﴾ يٰرَبُّنِّیْ											
मेरा वारिस हो	5	एक वारिस	अपने पास से	तू मुझे अ़ता कर	बाँझ	मेरी बीवी	और है	अपने बाद			
وَيَرِثْ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ ۚ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِیًّا ﴿٦﴾ یٰزَكَرِیَّا إِنَّا نُبَشِّرُكَ											
तुझे बशारत देते हैं	वेशक हम	ऐ ज़क़रिया (अ)	6	पसन्दीदा	ऐ मेरे रब	और उसे बनादे	औलादे याकूब (अ)	से-का	और वारिस हो		
بِغُلَامٍ إِسْمُهُ یَحْیٰی ۚ لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِیًّا ﴿٧﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي											
कैसे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	7	कोई हम नाम	इस से क़व्ल	उस का	नहीं बनाया हम ने	यहया	उस का नाम	एक लड़का	
يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ											
बुढ़ापा	से-की	और मैं पहुँच चुका हूँ	बाँझ	मेरी बीवी	जब कि वह है	मेरे लिए (मेरा) लड़का	होगा वह				
عَتِیًّا ﴿٨﴾ قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلٰی هٰٓئِنٍ وَقَدْ خَلَقْتُكَ											
तुझे पैदा किया	और मैं ने	आसान	मुझ पर	वह (यह)	तेरा रब	फरमाया	उसी तरह	उस ने कहा	8	इन्तिहाई हद	
مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ﴿٩﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيٓ اٰیَةً ۚ قَالَ											
फरमाया	कोई निशानी	मेरे लिए	कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	9	कोई चीज़ (कुछ भी)	जब कि तू न था	क़व्ल	इस से	
اٰیٰتِكَ اِلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَیَالٍ سَوِیًّا ﴿١٠﴾ فَخَرَجَ عَلٰی قَوْمِهِ											
अपनी कौम	पास	फिर वह निकला	10	ठीक	रात	तीन	लोग (जमा)	तू न बात करेगा	तेरी निशानी		
مِنَ الْمُحَرَابِ فَاَوْحٰی اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَعَشِیًّا ﴿١١﴾											
11	और शाम	सुबह	कि उस की पाकीज़गी बयान करो	उन की तरफ	तो उस ने इशारा किया	मेहराब	से				

يُحْيِي خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ وَاتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا (١٢) وَحَنَانًا							
और शफ़क़त	12	वचन से	नबूख़त - दानाई	और हम ने उसे दी	मज़बूती से	किताब	पकड़ो (थाम लो)
مَنْ لَدُنَّا وَزَكْوَةً وَكَانَ تَقِيًّا (١٣) وَبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ							
और न था वह	अपने माँ बाप से	और अच्छा सुलूक करने वाला	13	परहेज़गार	और वह था	और पाकीज़गी	अपने पास से
جَبَارًا عَصِيًّا (١٤) وَسَلَّمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ							
और जिस दिन	वह फौत होगा	और जिस दिन	वह पैदा हुआ	जिस दिन	उस पर	और सलाम	14
يُبْعَثُ حَيًّا (١٥) وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا							
अपने घर वालों से	जब वह यकसू हो गई	मरयम (अ)	किताब में	और ज़िक्र करो	15	ज़िन्दा हो कर	उठाया जाएगा
مَكَانًا شَرْقِيًّا (١٦) فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا							
फिर हम ने भेजा	पर्दा	उन की तरफ़	से	फिर डाल लिया	16	मशरिफ़ी	मकान
إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا (١٧) قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ							
पनाह में आती हूँ	वेशक मैं	वह बोली	17	ठीक	एक आदमी	उस के लिए	शकल बन गया
بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا (١٨) قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ							
तेरे रब का	भेजा हुआ	कि मैं	इस के सिवा नहीं	उस ने कहा	18	परहेज़गार	अगर तू है
لَا هَبْ لَكَ غُلَمًا زَكِيًّا (١٩) قَالَتْ أَنِّي يَكُونُ لِي غُلَمٌ وَلَمْ							
जब कि नहीं	लड़का	मेरे	होगा	कैसे	वह बोली	19	पाकीज़ा
يَمْسَسَنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكْ بَغِيًّا (٢٠) قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكِ							
तेरा रब	फ़रमाया	यूँही	उस ने कहा	20	बदकार	और मैं नहीं हूँ	किसी वशर ने
هُوَ عَلَى هَيْنٍ وَلَنَجْعَلَ لَكَ لِبَاسًا وَرَحْمَةً مِنَّا وَكَانَ							
और है	अपनी तरफ़ से	और रहमत	लोगों के लिए	एक निशानी	और ताकि हम उसे बनाएं	आसान	मुझ पर
أَمْرًا مَّقْضِيًّا (٢١) فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا (٢٢)							
22	दूर	एक जगह	उसे ले कर	पस वह चली गई	फिर उसे हमल रह गया	21	तै शुदा
فَاجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَى جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَلِيتَنِي مِثُّ							
मर चुकी होती	अए काश मैं	वह बोली	खजूर का दरख़्त	जड़	तरफ़	दर्दज़ाह	फिर उसे ले आया
قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا مِّنْهَا (٢٣) فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا							
उस के नीचे	से	पस उसे आवाज़ दी	23	भूली बिसरी	और मैं हो जाती	इस से क़ब्ल	
أَلَا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا (٢٤) وَهَزَيَ							
और हिला	24	एक चश्मा	तेरे नीचे	तेरा रब	कर दिया है	कि न घबरा तू	
إِلَيْكَ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسْقِطُ عَلَيْكَ رَطْبًا جَنِيًّا (٢٥)							
25	खजूरें	ताज़ा ताज़ा	तुझ पर	झड़ पड़ेंगी	खजूर	तने को	अपनी तरफ़

(इरशादे इलाही हुआ) ऐ यहया (अ)! किताब को मज़बूती से थाम लो, और हम ने उसे वचन (ही) से नबूख़त ओ दानाई देदी। (12) और अपने पास से शफ़क़त और पाकीज़गी (अता की) और वह परहेज़गार था, (13) और वह अपने माँ बाप से अच्छा सुलूक करने वाला था, और न था गर्दन कश नाफ़रमान। (14) और सलाम (सलामती) हो उस पर जिस दिन वह पैदा हुआ, और जिस दिन वह फौत होगा, और जिस दिन ज़िन्दा करके उठाया जाएगा। (15) और किताब (कुरआन) में मरयम (अ) का ज़िक्र (याद) करो, जब वह अपने घर वालों से अलग हो गई एक मशरिफ़ी मकान में। (16) फिर उस ने डाल लिया उन की तरफ़ से पर्दा, फिर हम ने उस की तरफ़ अपने फरिश्ते को भेजा, वह उस के लिए ठीक एक आदमी की शकल बन कर आया। (17) वह बोली वेशक मैं तुझ से अल्लाह की पनाह में आती हूँ, अगर तू परहेज़गार है (यहां से हट जा)। (18) उस ने कहा इस के सिवा नहीं कि मैं तेरे रब का भेजा हुआ हूँ ताकि तुझे एक पाकीज़ा लड़का अता करूँ। (19) वह बोली मेरे लड़का कैसे होगा? जब कि न मुझे किसी वशर ने छुआ, और न मैं बदकार हूँ। (20) उस ने कहा उसी तरह (अल्लाह का फ़ैसला है), तेरे रब ने फ़रमाया कि यह मुझ पर आसान है, और ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएं, और अपनी तरफ़ से रहमत, और यह है एक तै शुदा अमर। (21) फिर उसे हमल रह गया, पस वह उसे ले कर एक दूर जगह चली गई। (22) फिर दर्द ज़ह उसे खजूर के दरख़्त की जड़ की तरफ़ ले आया, वह बोली, ए काश! मैं इस से क़ब्ल मर चुकी होती, और मैं हो जाती भूली बिसरी। (23) पस उसे उस के नीचे (वादी) से (फरिश्ते ने) आवाज़ दी: तू घबरा नहीं, तेरे रब ने तेरे नीचे एक चश्मा (जारी) कर दिया है। (24) और खजूर का तना अपनी तरफ़ हिला, तुझ पर ताज़ा खजूरें झड़ पड़ेंगी। (25)

तू खा और पी और आँखें ठंडी कर, फिर अगर तू किसी आदमी को देखे तो कह दे कि मैं ने रहमान के लिए रोज़े की नज़र मानी है, पस आज हरगिज़ किसी आदमी से कलाम न करूँगी। (26)

फिर वह उसे उठा कर अपनी कौम के पास लाई, वह बोले ऐ मरयम (अ)! तू लाई है ग़ज़ब की शै। (27)

ऐ हारून (अ) की बहन! तेरा बाप बुरा आदमी न था और न तेरी माँ ही थी बदकार। (28)

तो मरयम ने उस (बच्चे) की तरफ़ इशारा किया, वह बोले: हम गहवारे (गोद) के बच्चे से कैसे बात करें? (29)

बच्चे ने कहा: बेशक मैं अल्लाह का बन्दा हूँ, उस ने मुझे किताब दी, (30)

और मुझे नबी बनाया, और जहाँ कहीं मैं हूँ मुझे वाबरकत बनाया है, और जब तक मैं ज़िन्दा रहूँ मुझे हुक्म दिया है नमाज़ का और ज़कात का, (31)

और अपनी माँ से अच्छा सुलूक करने का, और उस ने मुझे नहीं बनाया सरकश, बदनसीब। (32)

और सलामती हो मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ, और जिस दिन मैं मरूँगा, और जिस दिन मैं ज़िन्दा करके उठाया जाऊँगा। (33)

यह है ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ), सच्ची बात जिस में वह (लोग) शक करते हैं। (34)

अल्लाह के लिए (सज़ावार) नहीं है कि वह कोई बेटा बनाए, वह पाक है, जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह कहता है “हो जा” पस वह हो जाता है। (35)

और बेशक अल्लाह मेरा और तुम्हारा रब है, पस उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है। (36)

(फिर अहले किताब के) फिरकों ने इख़्तिलाफ़ किया बाहम, पस ख़राबी है काफ़िरों के लिए (क़ियामत के) बड़े दिन की हाज़िरी से, (37)

क्या कुछ सुनेंगे! और क्या कुछ देखेंगे! जिस दिन वह हमारे सामने आएंगे, लेकिन आज के दिन ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (38)

فَكُلِّيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۖ فَاِمَا تَرِيْنَ مِنَ الْبَشْرِ اَحَدًا ۙ							
कोई	आदमी	से	फिर अगर तू देखे	आँखें	और ठंडी कर	और पी	तू खा
فَقَوْلِيْ اِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۚ							
26	किसी आदमी	आज	पस मैं हरगिज़ कलाम न करूँगी	रोज़ा	रहमान के लिए	कि मैं ने नज़र मानी है	तो कह दे
فَاتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۚ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا							
27	बुरी (ग़ज़ब की)	शै	तू लाई है	ऐ मरयम	वह बोले	उसे उठाए हुए	फिर वह उसे ले कर आई
يٰاُخْتُ هُرُوْنُ مَا كَانَ اَبُوْكَ اَمْرًا سَوْءٍ ۚ وَمَا كَانَتْ اُمُّكَ بَغِيًّا							
28	बदकार	तेरी माँ	और न थी	बुरा	आदमी	तेरा बाप	था न ऐ हारून (अ) की बहन
فَاَشَارَتْ اِلَيْهٖ ۖ قَالُوْا كَيْفَ نُّكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا							
29	बच्चा	गहवारे में	जो है	कैसे हम बात करें	वह बोले	उस की तरफ़	तो मरयम ने इशारा किया
قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۖ اَتٰنِي الْكِتٰبُ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ۚ وَجَعَلَنِيْ							
और मुझे बनाया है	30	नबी	और मुझे बनाया है	किताब	उस ने मुझे दी है	अल्लाह का बन्दा	बच्चे ने कहा बेशक मैं
مُبْرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۚ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ							
जब तक मैं रहूँ	और ज़कात का	नमाज़ का	और मुझे हुक्म दिया है उस ने	मैं हूँ	जहाँ कहीं	वाबरकत	
حَيًّا ۚ وَبَرًّا بِوَالِدَتِيْ ۚ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ۚ وَالسَّلَامُ							
और सलामती	32	बदनसीब	सरकश	और उस ने मुझे नहीं बनाया	और अच्छा सुलूक करने वाला अपनी माँ से	31	ज़िन्दा
عَلٰى يَوْمٍ وُّلِدْتُ وَيَوْمٍ اَمُوْتُ وَيَوْمٍ اُبْعَثُ حَيًّا ۚ ذٰلِكَ							
यह	33	ज़िन्दा हो कर	उठाया जाऊँगा	और जिस दिन	मैं मरूँगा	और जिस दिन	मैं पैदा हुआ जिस दिन मुझ पर
عِيْسٰى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۚ مَا كَانَ لِلّٰهِ							
नहीं है अल्लाह के लिए	34	वह शक करते हैं	वह जिस में	सच्ची	वात	इब्ने मरयम	ईसा (अ)
اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ سُبْحٰنَهٗ ۚ اِذَا قَضٰى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ							
वह कहता है	तो इस के सिवा नहीं	किसी काम	जब वह फ़ैसला करता है	वह पाक है	बेटा	कोई	वह बनाए कि
لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاَعْبُدُوْهُ ۚ هٰذَا							
यह	पस उस की इबादत करो	और तुम्हारा रब	मेरा रब	अल्लाह	और बेशक	35	पस वह हो जाता है उस को
صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۚ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ							
पस ख़राबी	आपस में (बाहम)	फ़िर्कें	फिर इख़्तिलाफ़ किया	36	सीधा	रास्ता	
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدٍ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۚ اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصُرْ							
और देखेंगे	क्या कुछ	सुनेंगे	37	बड़ा दिन	हाज़िरी	से	काफ़िरों के लिए
يَوْمَ يَأْتُوْنََنَا لَكِنِ الظَّالِمُوْنَ الْيَوْمَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۚ							
38	खुली गुमराही	में	आज के दिन	ज़ालिम (जमा)	लेकिन	वह हमारे सामने आएंगे	जिस दिन

وَأَنْذَرَهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ						
और उन को डरावें आप (स)	हसरत का दिन	जब फैसला कर दिया जाएगा	काम	लेकिन वह	गफ़लत में हैं	और वह
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٩﴾ إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِنَّا						
ईमान नहीं लाते	39	वेशक हम	वारिस होंगे	ज़मीन	और जो	उस पर
يُرْجَعُونَ ﴿٤٠﴾ وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا						
वह लौटाए जाएंगे	40	और याद करो	किताब में	इब्राहीम (अ)	वेशक वह थे	सच्चे
نَبِيًّا ﴿٤١﴾ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ						
नबी	41	जब उस ने कहा	अपने बाप को	ऐ मेरे अब्बा	तुम क्यों परस्तिश करते हो	जो न सुने
وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ﴿٤٢﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا						
और न काम आए	तुम्हारे	कुछ	42	ऐ मेरे अब्बा	वेशक मैं	वेशक मेरे पास आया है
لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبَعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ﴿٤٣﴾ يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ						
तुम्हारे पास नहीं आया	पस मेरी बात मानो	मैं तुम्हें दिखाऊंगा	रास्ता	सीधा	43	ऐ मेरे अब्बा
إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ						
वेशक	शैतान	है	रहमान का	नाफरमान	44	ऐ मेरे अब्बा
يَمْسَكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمَنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ﴿٤٥﴾ قَالَ أَرَأَيْتَ						
तुझे आपकड़े	अज़ाब	से-का	रहमान	फिर तू हो जाए	शैतान का	साथी
أَنْتَ عَنِ الْهَيْئَةِ يَا إِبْرَاهِيمُ لَنْ لَّمْ تَنْتَهُ لَارْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِي مَلِيًّا ﴿٤٦﴾						
तू	से	मेरे माबूद (जमा)	ऐ इब्राहीम (अ)	अगर	तू बाज़ न आया	तो मैं तुझे संगसार कर दूँगा
قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ﴿٤٧﴾						
उस ने कहा	सलाम	तुझ पर	मैं अभी	तेरे लिए	अपना रब	वेशक वह
وَأَعْتَزِّلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُوا رَبِّي عَسَى						
और किनारा कशी करता हूँ तुम से	और जो	तुम परस्तिश करते हो	सिवाए	अल्लाह	और मैं इबादत करूँगा	अपना रब
أَلَّا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ﴿٤٨﴾ فَلَمَّا اغْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ						
कि न रहूँगा	इबादत से	अपना रब	महरूम	48	फिर जब	वह किनारा कश होगा उन से
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ﴿٤٩﴾						
सिवाए	अल्लाह	हम ने अता किया	उस को	इसहाक (अ)	और याकूब (अ)	और सब को
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ﴿٥٠﴾						
और हम ने अता किया	उन्हें	से	अपनी रहमत	और हम ने किया	उन का	ज़िक्र
وَادْكُرْ فِي الْكِتَابِ مُوسَى إِنَّهُ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ﴿٥١﴾						
और याद करो	किताब में	मूसा (अ)	वेशक वह	था	वरगुज़ीदा	और था

और आप (स) उन्हें हसरत के दिन से डरावें जब मामले का फैसला कर दिया जाएगा, लेकिन वह गफ़लत में हैं, और वह ईमान नहीं लाते। (39) वेशक हम वारिस होंगे ज़मीन के और जो कुछ उस पर है, और वह हमारी तरफ़ लौटाए जाएंगे। (40) और किताब में इब्राहीम (अ) को याद करो, वेशक वह सच्चे नबी थे। (41) जब उस ने अपने बाप से कहा, ऐ मेरे अब्बा: तुम क्यों उस की परस्तिश करते हो? जो न कुछ सुने और न देखे, और न काम आए तुम्हारे कुछ भी। (42) ऐ मेरे अब्बा! वेशक मेरे पास वह इल्म (वहि) आया है जो तुम्हारे पास नहीं आया, पस मेरी बात मानो, मैं तुम्हें ठीक सीधा रास्ता दिखाऊँगा। (43) ऐ मेरे अब्बा! शैतान की परस्तिश न कर, वेशक शैतान रहमान का नाफरमान है। (44) ऐ मेरे अब्बा! वेशक मैं डरता हूँ कि (कहीं) रहमान का अज़ाब तुझे (न) आ पकड़े। फिर तू हो जाए शैतान का साथी। (45) उस ने कहा ऐ इब्राहीम (अ)! क्या तू मेरे माबूदों से रूगर्दा है? अगर तू बाज़ न आया तो मैं तुझे ज़रूर संगसार कर दूँगा, और तुझे एक मुदत के लिए छोड़ दे। (46) इब्राहीम (अ) ने कहा तुझ पर सलाम हो, मैं अभी तेरे लिए अपने रब से बख़्शिश मांगूँगा, वेशक वह तुझ पर मेहरबान है, (47) और मैं किनारा कशी करता हूँ तुम से और अल्लाह के सिवा जिन की तुम परस्तिश करते हो, और मैं अपने रब की इबादत करूँगा, उम्मीद है कि मैं अपने रब की इबादत करके महरूम न रहूँगा। (48) फिर जब वह (इब्राहीम अ) उन से और अल्लाह के सिवा वह जिन की परस्तिश करते थे किनारा कश हो गए, हम ने उस को इसहाक (अ) और याकूब (अ) अता किए और (उन) सब को हम ने नबी बनाया। (49) और हम ने अपनी रहमत से उन्हें (बहुत कुछ) अता किया और हम ने उन का ज़िक्र जमील निहायत बुलन्द किया। (50) और किताब में मूसा (अ) को याद करो, वेशक वह वरगुज़ीदा थे, और रसूल नबी थे। (51)

और हम ने उसे कोहे तूर की दाहिनी जानिव से पुकारा, और हम ने उसे राज बतलाने को नज़दीक बुलाया। (52)

और हम ने उसे अपनी रहमत से उस का भाई हारून (अ) अता किया। (53)

और किताब में इस्माईल (अ) को याद करो, वेशक वह वादे के सच्चे थे, और रसूल नबी थे। (54)

और वह अपने घर वालों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देते थे, और वह अपने रब के हां पसंदीदा थे। (55)

और किताब में इदरीस (अ) को याद करो, वेशक वह सच्चे नबी थे। (56)

और हम ने उसे एक बुलन्द मुक़ाम पर उठा लिया। (57)

यह है नबियों में से वह जिन पर अल्लाह ने इन्आम किया औलादे आदम में से, और उन में से जिन्हें हम ने नूह (अ) के साथ (किशती में) सवार किया, और इब्राहीम (अ) और याकूब (अ) की औलाद में से, और उन में से जिन्हें हम ने हिदायत दी, और चुना, जब उन पर रहमान की आयतें पढ़ी जातीं वह ज़मीन पर गिर पड़ते सिज़्दा करते और रोते हुए। (58)

फिर उन के बाद चन्द नाख़लफ़ जानशीन हुए, उन्होंने ने नमाज़ गंवादी, और ख़ाहिशाते (नफ़सानी) की पैरवी की, पस अ़नक़रीब उन्हें गुमराही (की सज़ा) मिलेगी। (59)

मगर जिस ने तौबा की और ईमान लाया और नेक अ़मल किए, पस यही लोग हैं जो जन्नत में दाख़िल होंगे, और ज़री भर भी उन का नुक़सान न किया जाएगा, (60)

हमेशागी के बागात में जिन का वादा रहमान ने गा़इबाना अपने बन्दों से किया, वेशक उस का वादा आने वाला है। (61)

और उस में सलाम के सिवा कोई बेहूदा बात न सुनेंगे, और उन के लिए उस में सुबह ओ शाम उन का रिज़्क है। (62)

यह वह जन्नत है जिस का हम अपने (उन) बन्दों को वारिस बनाएंगे जो परहेज़गार होंगे। (63)

وَنَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا ٥٢							
और हम ने उसे पुकारा	से	जानिव	कोहे तूर	दाहिनी	और उसे नज़दीक बुलाया	राज बताने को	52
وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا ٥٣							
और हम ने उसे अता किया	उसे	अपनी रहमत से	उस का भाई	हारून (अ)	नबी	और याद करो	53
إِسْمَاعِيلَ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ٥٤							
इस्माईल (अ)	वेशक वह	थे	वादे का सच्चा	और थे	रसूल	नबी	54
وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ٥٥							
और हुक्म देते थे	अपने घर वाले	नमाज़ का	और ज़कात	और वह थे	अपने रब के हां	पसन्दीदा	55
وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ٥٦							
और याद करो	किताब में	इदरीस (अ)	वेशक वह	थे	सच्चे	नबी	56
مَكَانًا عَلِيًّا ٥٧							
एक मुक़ाम	बुलन्द	57	यह वह लोग	वह जिन्हें	अल्लाह ने इन्आम किया	उन पर	से
مِنْ ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِنْ ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَءِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَنِ خَرُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ٥٨							
और उन से जिन्हें	सवार किया हम ने	साथ	नूह (अ)	और से	औलाद	उन पर	जब पढ़ी जाती
इब्राहीम (अ) और याकूब (अ)	और उन से जिन्हें	हम ने हिदायत दी	और हम ने चुना	और हम ने चुना	जब पढ़ी जाती	उन पर	58
أَصَاغُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ فَسُوفَ يَلْقَوْنَ غِيًّا ٥٩							
उन्होंने ने गंवादी	नमाज़	और पैरवी की	ख़ाहिशात	पस अ़नक़रीब	उन्हें मिलेगी	गुमराही	59
إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ٦٠							
जन्नत	और उन का न नुक़सान किया जाएगा	कुछ-ज़रा	60	हमेशागी के बागात	वह जो	वादा किया	वह दाख़िल होंगे
الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًّا ٦١							
रहमान	अपने बन्दे (जमा)	गाइबाना	वेशक वह	है	उस का वादा	आने वाला	61
فِيهَا لَعْنًا إِلَّا سَلَامًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ٦٢							
उस में	बेहूदा	सिवा सलाम	और उन के लिए	उन का रिज़्क	उस में	सुबह	और शाम
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ٦٣							
यह	जन्नत	वह जो कि	हम वारिस बनाएंगे	से-को	अपने बन्दे	जो	होंगे

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا							
हमारे पीछे	और जो	जो हमारे हाथों में (आगे)	उस के लिए	तुम्हारा रब	हुकम से	मगर	हम उतरते और नहीं
وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا (64) رَبُّ السَّمَوَاتِ							
आस्मानों का रब	64	भूलने वाला	तुम्हारा रब	है	और नहीं	उस के दरमियान	और जो
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ							
तू जानता है	क्या	उस की इबादत पर	और साबित कदम रहो	पस उसी की इबादत करो	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन
لَهُ سَمِيًّا (65) وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَا مِثْلُ لَسَوْفَ أَخْرُجُ حَيًّا (66)							
66	ज़िन्दा	मैं निकाला जाऊँगा	तो फिर	मैं मर गया	क्या जब	इन्सान	और कहता है
أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا (67)							
67	कुछ भी	जब कि वह न था	इस से क़व्ल	हम ने उसे पैदा किया	वेशक हम	इन्सान	याद करता
فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ							
जहन्नम	ईर्द गिर्द	हम उन्हें ज़रूर हाज़िर करलेंगे	फिर	शैतान (जमा)	हम उन्हें ज़रूर जमा करेंगे	सो तुम्हारे रब की कसम	
جَحِيًّا (68) ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَنِ							
अल्लाह रहमान से	बहुत ज़ियादा	जो उन में से	गिरोह	हर	से	ज़रूर खींच निकालेंगे	फिर
عِتْيَا (69) ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا (70) وَإِنْ							
और नहीं	70	दाखिल होना	ज़ियादा मुस्तहिक उस में	वह	उन से जो	खूब वाकिफ़	अलबत्ता
مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا مَّقْضِيًّا (71) ثُمَّ نُنَجِّي							
हम नजात देंगे	फिर	71	मुक़र्रर किया हुआ	लाज़िम	तुम्हारा रब	पर	है
الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِّيًّا (72) وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ							
उन पर	पढ़ी जाती है	और जब	72	घुटनों के बल गिरे हुए	उस में	ज़ालिम (जमा)	और हम छोड़ देंगे
أَيُّنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ							
दोनों फ़रीक़	कौन सा	वह ईमान लाए	उन से जो	कुफ़ किया	वह जिन्होंने	कहते हैं	वाज़ेह
خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدِيًّا (73) وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُم مِّن قَرْنٍ هُمْ							
वह	गिरोहों में से	उन से पहले	हम हलाक कर चुके	और कितने ही	73	मजलिस	और अच्छी
أَحْسَنُ أَثَا وَرَبِّيًّا (74) قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ							
उस को	तो ढील दे रहा है	गुमराही में	जो है	कह दीजिए	74	और नमूद	सामान
الرَّحْمَنُ مَدَّاهُ حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا							
और ख़्वाह	अज़ाब	ख़्वाह	जिस का वादा किया जाता है	वह देखेंगे	जब	यहां तक कि	खूब ढील
السَّاعَةِ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرُّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا (75)							
75	लशकर	और कमज़ोर तर	बदतर मुक़ाम	वह	कौन	पस अब वह जान लेंगे	क़ियामत

और (फ़रिश्तों ने कहा) हम तुम्हारे रब के हुकम के बग़ैर नहीं उतरते, उसी के लिए है जो हमारे आगे, और जो हमारे पीछे है और जो उस के दरमियान है, और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। (64)

वह रब है आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उन के दरमियान है, पस तुम उसी की इबादत करो, और उस की इबादत पर साबित कदम रहो, क्या तू कोई उस का हम नाम जानता है? (65)

और (काफ़िर) इन्सान कहता है क्या जब मैं मर गया तो फिर मैं ज़िन्दा कर के (ज़मीन से) निकाला जाऊँगा! (66)

क्या इन्सान याद नहीं करता (क्या उसे याद नहीं) कि हम ने उसे इस से पहले पैदा किया जब कि वह कुछ भी न था। (67)

सो तुम्हारे रब की कसम हम उन्हें और शैतानों को ज़रूर जमा करेंगे, फिर हम उन्हें ज़रूर हाज़िर कर लेंगे जहन्नम के गिर्द घुटनों के बल गिरे हुए। (68)

फिर हर गिरोह में से हम उसे ज़रूर खींच निकालेंगे जो उन में अल्लाह रहमान से बहुत ज़ियादा सरकशी करने वाला था। (69)

फिर अलबत्ता हम उन से खूब वाकिफ़ हैं जो उस (जहन्नम) में दाखिल होने के ज़ियादा मुस्तहिक हैं। (70)

और तुम में से कोई नहीं मगर उसे (हर एक को) यहां से गुज़रना होगा। तुम्हारे रब का अपने ऊपर लाज़िम मुक़र्रर किया हुआ। (71)

फिर हम उन लोगों को नजात देंगे जिन्होंने ने परहेज़गारी की, और हम ज़ालिमों को उस में छोड़ देंगे घुटनों के बल गिरे हुए। (72)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयतें पढ़ी जाती हैं तो जिन्होंने ने कुफ़ किया वह ईमान लाने वालों से कहते हैं, दोनों फ़रीक़ में से किस का मुक़ाम (मरतबा) बेहतर और मजलिस अच्छी है? (73)

और इन से पहले हम कितने ही गिरोह हलाक कर चुके हैं, वह सामान और नमूद में (इन से) बहुत अच्छे थे। (74)

कह दीजिए जो गुमराही में है तो उस को अर-रहमान गुमराही में और खूब ढील दे रहा है यहां तक कि वह देख लेंगे, या अज़ाब या क़ियामत जिस का उन से वादा किया जाता है, पस वह तब जान लेंगे कौन है बदतर मुक़ाम (मरतबा) में? और कमज़ोर तर लशकर में। (75)

और जिन लोगों ने हिदायत हासिल की अल्लाह उन्हें और ज़ियादा हिदायत देता है, और तुम्हारे रब के नज़दीक बाकी रहने वाली नेकियां बेहतर हैं ब-एतिबारे सबाब और बेहतर हैं ब-एतिबारे अन्जाम। (76)

पस क्या तू ने उस शख्स को देखा जिस ने हमारे हुक्मों का इन्कार किया? और कहा मैं ज़रूर माल और औलाद दिया जाऊंगा। (77)

क्या वह ग़ैब पर मत्ला हो गया है? या उस ने अल्लाह रहमान से ले लिया है कोई अहद। (78)

हरगिज़ नहीं! जो वह कहता है अब हम लिख लेंगे और उस को अज़ाब लंबा बढ़ादेंगे। (79)

और हम वारिस होंगे (ले लेंगे) जो वह कहता है और वह हमारे पास अकेला आएगा। (80)

और उन्होंने ने अल्लाह के सिवा (औरों को) माबूद बना लिया है ताकि उन के लिए मोज़िबे इज़ज़त हों। (81)

हरगिज़ नहीं, जल्द ही वह उन की बन्दगी से इन्कार करेंगे और उन के मुखालिफ़ हो जाएंगे। (82)

क्या तुम ने नहीं देखा? बेशक हम ने शैतान भेजे हैं काफ़िरों पर, वह उन्हें खूब उकसाते रहते हैं। (83)

सो तुम उन पर (नुज़ूले अज़ाब की) जल्दी न करो, हम तो सिर्फ़ उन की गिनती पूरी कर रहे हैं (उन के दिन गिन रहे हैं)। (84)

(याद करो) जिस दिन हम परहेज़गारों को अल्लाह रहमान की तरफ़ मेहमान बना कर जमा कर लाएंगे। (85)

और हम गुनाहगारों को हांक कर ले जाएंगे जहन्नम की तरफ़ प्यासे। (86)

वह शफ़ाअत का इख़्तियार नहीं रखते सिवाए उस के जिस ने अल्लाह रहमान से लिया हो इक़्रार। (87)

और वह कहते हैं अल्लाह रहमान ने बेटा बना लिया है, (88)

तहकीक़ तुम (ज़बान पर) बुरी बात लाए हो। (89)

क़रीब है (बईद नहीं) कि आस्मान उस से फट पड़ें और ज़मीन टुकड़े टुकड़े हो जाए, और पहाड़ पारा पारा हो कर गिर पड़ें। (90)

कि उन्होंने ने अल्लाह के लिए मन्सूब किया बेटा। (91)

जब कि रहमान के शायान नहीं कि वह बेटा बनाए। (92)

नहीं कोई जो आस्मानों में है और ज़मीन में है, मगर रहमान के (हुज़ूर) बन्दा हो कर आता है। (93)

उस ने उन को घेर लिया है, और गिन कर उन का शुमार कर लिया है। (94)

और उन में से हर एक क़ियामत के दिन उस के सामने अकेला आएगा। (95)

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبَقِيَّةُ الصَّلَاحُ							
और ज़ियादा देता है	अल्लाह	जिन लोगों ने	हिदायत हासिल की	हिदायत	रहने वाली बाकी नेकियां	और	नेकियां
خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًا ٧٦ أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ							
बेहतर	तुम्हारे रब के नज़दीक	सबाब	व एतिबारे	और बेहतर	अन्जाम	76	पस क्या तू ने देखा वह जिस ने इन्कार किया
بِأَيِّنَّا وَقَالَ لَاؤْتَيْنَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ٧٧ أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمْ اتَّخَذَ							
हमारे हुक्मों का	और उस ने कहा	मै ज़रूर दिया जाऊंगा	माल	और औलाद	77	क्या वह मुत्तला हो गया है	उस ने ले लिया है या ग़ैब
عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ٧٨ سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ							
अल्लाह रहमान से	कोई अहद	78	हरगिज़ नहीं	अब हम लिख लेंगे	वह जो कहता है	और हम बढ़ा देंगे	उस को
مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ٧٩ وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ٨٠ وَاتَّخَذُوا							
अज़ाब से	और लंबा	79	और हम वारिस होंगे	जो वह कहता है	और वह हमारे पास आएगा	अकेला	80 और उन्होंने ने बना लिया
مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ٨١ كَلَّا سَيَكْفُرُونَ							
अल्लाह के सिवा	माबूद	ताकि वह हो	उन के लिए	मोज़िबे इज़ज़त	81	हरगिज़ नहीं	जल्द ही वह इन्कार करेंगे
بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ٨٢ أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ							
उन की बन्दगी से	और हो जाएंगे	उन के	मुखालिफ़	82	क्या तुम ने नहीं देखा	बेशक हम ने भेजे	शैतान (जमा)
عَلَى الْكَافِرِينَ تُوَزُّهُمْ أَزًّا ٨٣ فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَذًّا ٨٤							
पर	काफ़िर (जमा)	उकसाते हैं उन्हें खूब उकसाना	83	सो तुम जल्दी न करो	उन पर	सिर्फ़ हम गिनती पूरी कर रहे हैं	उन की गिनती
يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا ٨٥ وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ							
जिस दिन	हम जमा कर लेंगे	परहेज़गार (जमा)	रहमान की तरफ़	मेहमान बना कर	85	और हांक कर ले जाएंगे	गुनाहगार (जमा)
إِلَى جَهَنَّمَ وَرْدًا ٨٦ لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ							
तरफ़	जहन्नम	प्यासे	86	वह इख़्तियार नहीं रखते	शफ़ाअत	सिवाए	जिस ने लिया हो रहमान के पास
عَهْدًا ٨٧ وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ٨٨ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ٨٩							
इक़्रार	87	और वह कहते हैं	बना लिया है	रहमान	बेटा	88	तहकीक़ तुम लाए हो एक बात बुरी
تَكَادُ السَّمُوتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ٩٠							
क़रीब है	आस्मान	फट पड़े	उस से	और टुकड़े टुकड़े हो जाए	ज़मीन	और गिर पड़े	पहाड़ पारा पारा
أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ٩١ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ٩٢							
कि उन्होंने ने पुकारा (मन्सूब किया)	रहमान के लिए	बेटा	91	जब कि नहीं	शायान	रहमान के लिए	कि वह बनाए बेटा
إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا أَتَى الرَّحْمَنَ عَبْدًا ٩٣							
नहीं तमाम (कोई)	जो	आस्मानों में	और ज़मीन	मगर आता है	रहमान	बन्दा	93
لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ٩٤ وَكُلُّهُمْ أَتِيهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَرْدًا ٩٥							
उस ने उन को घेर लिया है	और उन का शुमार कर लिया है गिन कर	94	और उन में से हर एक	आएगा उस के सामने क़ियामत के दिन	अकेला	95	

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ						
वेशक	जो लोग ईमान लाए	और उन्होंने ने	नेक	पैदा कर देगा	उन के लिए	रहमान
وَدًّا ۙ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ						
मुहब्बत	96	पस उस के सिवा नहीं	हम ने इसे आसान कर दिया है	आप की ज़वान में	ताकि आप खुशखबरी दें उस से	परहेज़गारों और डराएं उस से
قَوْمًا لَّدَا ۙ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِشُّ						
झगड़ालू लोग	97	और कितने ही	हम ने हलाक कर दिए	उन से कबल	से	गिरोह क्या तुम देखते हो
مِّنْهُمْ مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ۙ						
उन से	कोई किसी को	या तुम सुनते हो	उन की	आहट	98	
آيَاتُهَا ۙ ۛ (۲۰) سُورَةُ طه ۛ زُكُوعَاتُهَا ۙ						
आयात	135	सूरह ता हा	(20)	रुकुआत	8	
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ						
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है						
طه ۙ مَا أَنزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَى ۙ إِلَّا تَذَكُّرًا لِّمَن						
ता हा	1	हम ने नाज़िल नहीं किया	तुम पर	कुरआन	ताकि तुम मुशक्कत में पड़ जाओ	2
उस के लिए जो	याद दिहानी	मगर	उस के लिए जो	काइम	अस्मानों में	और जो
يَخْشَى ۙ (۳) تَنْزِيلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمُوتِ الْعُلَى ۙ						
डरता है	3	नाज़िल किया हुआ	से - जिस	बनाया	ज़मीन	और आस्मान (जमा)
ऊंचे	4					
الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۙ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا						
रहमान	अर्श पर	काइम	5	उस के लिए जो	अस्मानों में	और जो
فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ۙ وَإِنْ تَجَهَّرَ بِالْقَوْلِ						
ज़मीन में	और जो	उन दोनों के दरमियान	और जो	नीचे	गीली मिट्टी	6
वात	तू पुकार कर कहे	और अगर				
فَاتَّه يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۙ (۷) اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ						
तो वेशक वह	जानता है	भेद	और निहायत पोशीदा	7	अल्लाह	नहीं कोई माबूद
सब नाम	उसी के लिए	उस के सिवा				
الْحُسْنَى ۙ (۸) وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۙ (۹) إِذْ رَأَى نَارًا فَقَالَ						
अच्छे	8	और क्या	तुम्हारे पास आई	कोई खबर	मूसा (अ)	9
तो	आग	जब उस ने देखी				
لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُم مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ						
अपने घर वालों को	तुम ठहरो	वेशक मैं ने	देखी है	आग	शायद मैं	तुम्हारे पास लाऊँ
या	चिंगारी	उस से				
أَجِدْ عَلَى النَّارِ هُدًى ۙ (۱۰) فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَمُوسَى ۙ (۱۱) إِنِّي أَنَا						
मैं पाऊँ	आग पर - के	रास्ता	10	जब पस	वह वहाँ आए	आवाज़ आई
मैं	वेशक मैं	11	ऐ मूसा (अ)			
رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۙ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۙ (۱۲)						
तुम्हारा रब	सो उतार लो	अपनी जूतियाँ	वेशक तुम	पाक मैदान	तुवा	12

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने किए अमल नेक उन के लिए पैदा कर देगा रहमान (दिलों में) मुहब्बत। (96)

पस उस के सिवा नहीं कि हम ने (कुरआन) को आप (स) की ज़वान में आसान कर दिया ताकि उस से आप (स) परहेज़गारों को खुशखबरी दें और झगड़ालू लोगों को उस से डराएं। (97)

और इन से कबल हम ने हलाक कर दिए कितने ही गिरोह, क्या तम उन में से किसी को देखते हो? या उन की आहट सुनते हो? (98)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरवान, रहम करने वाला है ता-हा। (1)

हम ने कुरआन तम पर इस लिए नाज़िल नहीं किया कि तम मुशक्कत में पड़ जाओ। (2)

मगर उस के लिए नसीहत है जो डरता है। (3)

नाज़िल किया हुआ है (उस की तरफ से) जिस ने ज़मीन और ऊंचे आस्मान बनाए। (4)

रहमान अर्श पर काइम है। (5)

उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और जो उन दोनों के दरमियान है, और जो ज़मीन के नीचे है। (6)

और अगर तू पुकार कर कहे वात तो वेशक वह भेद जानता है और निहायत पोशीदा (वात को भी)। (7)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी के लिए हैं सब अच्छे नाम। (8)

और क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की खबर आई? (9)

जब उस ने आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि तम ठहरो, वेशक मैं ने देखी है आग, शायद मैं तुम्हारे पास उस से चिंगारी ले आऊँ, या आग पर रास्ते (का पता) पा लूँ। (10)

पस जब वह वहाँ आए, तो आवाज़ आई ऐ मूसा (अ)! (11)

वेशक मैं ही तुम्हारा रब हूँ, सो अपनी जूतियाँ उतार लो, वेशक तम तुवा के पाक वादी में हो। (12)

और मैं ने तुम्हें पसंद किया, पस जो वहि की जाए उस की तरफ़ कान लगा कर सुनो। (13) वेशक मैं ही अल्लाह हूँ, मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस मेरी इबादत करो और काइम करो मेरी याद के लिए नमाज़, (14) वेशक कियामत आने वाली है, मैं चाहता हूँ कि उसे पोशीदा रखूँ ताकि हर शख्स को बदला दिया जाए उस कोशिश का जो वह करे। (15) पस तुझे उस से वह न रोक दे जो उस पर ईमान नहीं रखता और अपनी चाहिश के पीछे पड़ा हुआ है, फिर तू हलाक हो जाए। (16) और ऐ मूसा (अ) यह तेरे दाहने हात में क्या है? (17) उस ने कहा यह मेरा असा है, मैं इस पर टेक लगाता हूँ, और इस से पत्ते झाड़ता हूँ अपनी बकरियों पर, और इस में मेरे और भी कई फाड़े हैं। (18) उस ने फरमाया ऐ मूसा (अ)! इसे (ज़मीन पर) डाल दे। (19) पस उस ने डाल दिया, तो नागाह वह दौड़ता हुआ सांप (बन गया)। (20) (अल्लाह ने) फरमाया उसे पकड़ ले, और न डर, हम जल्द उसे उस की पहली हालत पर लौटा देंगे, (21) अपना हाथ अपनी बगल में लगा ले, वह किसी ऐब के बग़र सफ़ेद (चमकता हुआ) निकलेगा, (यह) दूसरी निशानी है। (22) ताकि हम तुझे दिखाएं अपनी बड़ी निशानियों में से। (23) तू फिरऔन की तरफ़ जा, वेशक वह सरशक हो गया है। (24) मूसा (अ) ने कहा, ऐ मेरे रब! मेरे लिए कुशादा कर दे मेरा सीना। (25) और मेरे लिए मेरा काम आसान कर दे। (26) और मेरी ज़वान की गिरह खोल दे। (27) कि वह मेरी बात समझ लें। (28) और बना दे मेरे लिए वज़ीर (मुआविन) मेरे खानदान से, (29) मेरा भाई हारून (अ)। (30) उस से मेरी कुव्वत (कमर) मज़बूत कर दे। (31) और उसे शरीक कर दे मेरे काम में। (32) ताकि हम कस्रत से तेरी तस्वीह करें, (33) और कस्रत से तुझे याद करें। (34) वेशक तू हमें खूब देखता है। (35) अल्लाह ने फरमाया, ऐ मूसा (अ)! जो तू ने मांगा तहकीक़ तुझे दे दिया गया। (36) और तहकीक़ हम ने तुझ पर एक बार और भी एहसान किया था। (37) जब हम ने तेरी वालिदा को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था। (38)

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَىٰ (١٣) إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي (١٤) إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ (١٥) فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَتَرْدَىٰ (١٦) وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يُمُوسَىٰ (١٧)									
नहीं कोई माबूद	अल्लाह	मैं	वेशक मैं	13	उस की तरफ़ जो वहि की जाए	पस कान लगा कर सुनो	तुम्हें पसन्द किया	और मैं	
आने वाली	कियामत	वेशक	14	मेरी याद के लिए	नमाज़	और काइम करो	पस मेरी इबादत करो	मेरे सिवा	
उस से जो	पस तुझे रोक न दे	15	उस का जो वह कोशिश करे	शख्स	हर	ताकि बदला दिया जाए	मैं उसे पोशीदा रखूँ	मैं चाहता हूँ	
17	ऐ मूसा (अ)	तेरे दाहने हाथ में	यह	और क्या	16	फिर तू हलाक हो जाए	अपनी चाहिश पीछे पड़ा	उस पर	ईमान नहीं रखता
इस में	और मेरे लिए	अपनी बकरियाँ	पर	और मैं पत्ते झाड़ता हूँ इस से	इस पर	मैं टेक लगाता हूँ	मेरा असा	यह	उस ने कहा
साँप	तो नागाह वह	पस उस ने डाल दिया	19	ऐ मूसा (अ)	उसे डाल दे	उस ने फरमाया	18	और भी	(ज़रूरतें) फाड़े
21	पहली	उस की हालत	हम जल्द उसे लौटा देंगे	और न डर	उसे पकड़ ले	फरमाया	20	दौड़ता हुआ	
निशानी	ऐब	बग़ैर किसी	सफ़ेद	वह निकलेगा	अपनी बगल	तक - से	अपना हाथ	और (मिला) लगा	
वेशक वह	फिरऔन	तरफ़	तू जा	23	बड़ी	अपनी निशानियों से	ताकि हम तुझे दिखाएं	22	दूसरी
और खोल दे	26	मेरा काम	और मेरे लिए आसान कर दे	25	मेरा सीना	मेरे लिए	कुशादा कर दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा
से	मेरा वज़ीर	मेरे लिए	और बना दे	28	मेरी बात	वह समझ लें	27	मेरी ज़वान	से - की
32	मेरे काम में	और शरीक कर दे	31	मेरी कुव्वत	मज़बूत कर उस से	30	मेरा भाई	हारून (अ)	29
तू है	वेशक तू	34	कस्रत से	और तुझे याद करें	33	कस्रत से	हम तेरी तस्वीह करें	ताकि	
और तहकीक़ हम ने एहसान किया	36	ऐ मूसा (अ)	जो तू ने मांगा	तहकीक़ तुझे दे दिया गया	अल्लाह ने फरमाया	35	हमें खूब देखता है		
जो इल्हाम करना था	38	तेरी वालिदा	तरफ़ - को	हम ने इल्हाम किया	जब	37	और भी	एक बार	तुझ पर

اِنْ اَقْذِفِيْهِ فِى السَّابُوتِ فَاقْذِفِيْهِ فِى الْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ दार्या फिर उसे डाल देगा दार्या में फिर उसे डाल दे सन्दूक में कि तू उसे डाल						
بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّى وَعَدُوٌّ لَهُ ۚ وَالْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً मुहब्बत तुझ पर और मैं ने डाल दी और उस का दुश्मन मेरा दुश्मन उसे ले लेगा साहिल पर						
مِّنِّى ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِى ^(३९) اِذْ تَمْشِىْ اُحْثٰكَ فَتَقُوْلُ तो वह तरी बहन जा रही थी जब 39 मेरी आँखों पर (मेरे सामने) ताकि तू पर्वरिश पाए अपनी तरफ से						
هَلْ اَدْرٰكُمْ عَلَىٰ مَن يَّكْفُلُهُ ۚ فَرَجَعْنَاكَ اِلٰى اُمِّكَ كَىٰ تَقَرَّ عَيْنُهَا उस की आँख ताकि ठंडी हो तेरी माँ तरफ पस हम ने तुझे लौटा दिया उस की पर्वरिश करे जो पर क्या मैं तुम्हें बताऊँ						
وَلَا تَحْزَنْ ۚ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ और तुझे आजमाया ग़म से तो हम ने तुझे नजात दी एक शख्स और तू ने क़त्ल कर दिया और वह ग़म न करे						
فُتُوْنًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِىْ اَهْلِ مَدْيَنَ ۚ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ वक़्ते मुक़र्रर पर तू आया फिर मदयन वाले में कई साल फिर तू ठहरा रहा कई आजमाइशों						
يُّمُوْسٰى ^(४०) وَاَصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِى ^(४१) اِذْهَبْ اَنْتَ وَاُخُوْكَ بِاَيَّتِىْ मेरी निशानियों के साथ और तेरा भाई तू तू जा 41 खास अपने लिए और हम ने तुझे बनाया 40 ऐ मूसा (अ)						
وَلَا تَنِيَا فِىْ ذِكْرِى ^(४२) اِذْهَبَا اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهُ طَغٰى ^(४३) فَقُوْلَا لَهُ उस को तुम कहो 43 सरकश हो गया वेशक वह फिरऔन तरफ-पास तुम दोनों जाओ 42 मेरी याद में और सुस्ती न करना						
قُوْلَا لِّىْنَا لَعَلَّهٖ يَتَذَكَّرُ اَوْ يَخْشٰى ^(४४) قَالَا رَبَّنَا اِنَّا نَخَافُ वेशक हम डरते हैं ऐ हमारे रब दोनों बोले 44 वह डर जाए या नसीहत पकड़ ले शायद वह नर्म बात						
اَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَا اَوْ اَنْ يَّطْغٰى ^(४५) قَالَ لَا تَخَافَا اِنِّىْ مَعَكُمْ اَسْمَعُ मैं सुनता हूँ तुम्हारे साथ हूँ वेशक मैं तुम डरो नहीं उस ने फ़रमाया 45 वह हद स बढ़े या हम पर कि वह ज़ियादती करे						
وَاَرٰى ^(४६) فَاتِيْهِ فَقُوْلَا اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَارْسِلْ مَعَنَا بَنِيْۤ اِسْرٰءِيْلَ बनी इस्राईल हमारे साथ पस भेज दे तेरा रब वेशक हम दोनों भेजे हुए और तुम कहो पस जाओ उस के पास 46 और मैं देखता हूँ						
وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۚ قَدْ جِئْنَاكَ بِاٰیَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ۚ وَالسَّلَامُ और सलाम तेरा रब से निशानी के साथ हम तेरे पास आए हैं और उन्हें अज़ाब न दे						
عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ^(४७) اِنَّا قَدْ اُوْحٰى اِلَيْنَا اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى पर अज़ाब कि हमारी तरफ वहि की गई वेशक 47 हिदायत उस ने पैरवी की जो-जिस पर						
مِّنْ كَذَّبٍ وَتَوَلٰى ^(४८) قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمْ يُّمُوْسٰى ^(४९) قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْ اَعْطٰى अता की जिस ने हमारा रब उस ने कहा 49 ऐ मूसा (अ) तुम्हारा रब पस कौन उस ने कहा 48 और मुंह फेरा जिस ने झुटलाया						
كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ثُمَّ هٰدٰى ^(५०) قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاَوَّلٰى ^(५१) 51 पहली जमाअतें हाल फिर क्या उस ने कहा 50 रहनुमाई की फिर उस की शकल ओ सूरत हर चीज़						

कि तू उसे सन्दूक में डाल, फिर सन्दूक दर्या में डाल दे, फिर डाल देगा दर्या उसे साहिल पर, मेरा और उस का दुश्मन उस को ले लेगा (दार्या से निकाल लेगा) और मैं ने डाल दी तुझ पर मुहब्बत अपनी तरफ से (मख़लूक तुझ से मुहब्बत करे) ताकि तू पर्वरिश पाए मेरे सामने। (39) और (याद कर) जब तेरी बहन जा रही थी तो (आले फिरऔन से) कह रही थी कि क्या मैं तुम्हें (उस का पता) बताऊँ जो इस की पर्वरिश करे? पस हम ने तुझे तेरी माँ की तरफ लौटा दिया, ताकि उस की आँखें ठंडी हों, और वह ग़म न करे, और तू ने एक शख्स को क़त्ल कर दिया तो हम ने तुझे नजात दी ग़म से, और तुझे कई आजमाइशों से आजमाया, फिर कई साल मदयन वालों में ठहरा रहा, फिर तू आया वक़्ते मुक़र्रर पर ऐ मूसा (अ) (मुताबिक़ तक्दीरे इलाही)। (40) और मैं ने तुझे खास अपने लिए बनाया। (41) तुम और तुम्हारा भाई दोनों जाओ मेरी निशानियों के साथ, और सुस्ती न करना मेरी याद में। (42) तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ, वेशक वह सरकश हो गया है। (43) तुम उस को नर्म बात कहो शायद वह नसीहत पकड़ ले या डर जाए। (44) वह बोले, ऐ हमारे रब! वेशक हम डरते हैं कि (कहीं) वह हम पर ज़ियादती (न) करे या हद से (न) बढ़े। (45) उस ने फ़रमाया तुम डरो नहीं, वेशक मैं तुम्हारे साथ हूँ, मैं सुनता और देखता हूँ। (46) पस उस के पास जाओ और कहो वेशक हम दोनों भेजे हुए हैं तेरे रब के, पस बनी इस्राईल को हमारे साथ भेज दे और उन्हें अज़ाब न दे, हम तेरे पास तेरे रब की निशानी के साथ आए हैं, और सलाम हो उस पर जिस ने हिदायत की पैरवी की। (47) वेशक हमारी तरफ वहि की गई है कि अज़ाब है उस पर जिस ने झुटलाया और मुंह फेरा। (48) उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! पस तुम्हारा रब कौन है? (49) मूसा (अ) ने कहा हमारा रब वह है जिस ने हर चीज़ को उस की शकल ओ सूरत अता की फिर उस की रहनुमाई की। (50) उस ने कहा फिर पहली जमाअतों का क्या हाल है? (51)

मूसा (अ) ने कहा उस का इल्म मेरे रब के पास किताब में है, मेरा रब न ग़लती करता है, और न भूलता है। (52) वह जिस ने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया, और तुम्हारे लिए चलाई उस में राहें, और आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से सबज़ी की मुख़्तलिफ़ अक़्साम निकाली। (53) तुम खाओ और अपने मवेशी चराओ, बेशक उस में अक़ल वालों के लिए निशानियां हैं। (54) उस (ज़मीन) से हम ने तुम्हें पैदा किया और उसी में हम तुम्हें लौटा देंगे, और उसी से हम तुम्हें दूसरी बार निकालेंगे। (55) और हम ने उसे (फ़िरअौन) को अपनी तमाम निशानियां दिखाई तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया। (56) उस ने कहा ऐ मूसा (अ)! क्या तू हमारे पास आया है कि तू हमें अपने जादू के ज़रीए हमारी ज़मीन (मुल्क से) निकाल दे। (57) पस हम तेरे मुक़ाबल ज़रूर लाएंगे उस जैसा एक जादू, पस हमारे और अपने दरमियान एक वक़्त मुक़र्रर कर ले कि न हम उस के खिलाफ़ करें और न तू, एक हमवार मैदान (में मुक़ाबला होगा)। (58) मूसा (अ) ने कहा तुम्हारा वादा मेले का दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े जमा किए जाएं। (59) फिर लौट गया फ़िरअौन, सो उस ने अपना दाओ (जादू का सामान) जमा किया, फिर आया। (60) मूसा (अ) ने उन से कहा तुम पर ख़राबी हो, अल्लाह पर न घड़ो झूट कि वह तुम्हें अज़ाब से हलाक करदे, और जिस ने झूट बान्धा वह नामुराद हुआ। (61) तो वह बाहम अपने काम में झगड़ने लगे और उन्होंने ने छुप कर मशवरा किया। (62) वह कहने लगे तहकीक़ यह दोनों जादूगर हैं, यह चाहते हैं कि तुम्हें तुम्हारी सर ज़मीन से निकाल दें अपने जादू के ज़रीए, और तुम्हारा अच्छा तरीका ले जाएं (नाबूद कर दें)। (63) लिहाज़ा अपने दाओ इकट्ठे कर लो, फिर सफ़ बान्ध कर आओ, और तहकीक़ कामयाब होगा वही जो आज ग़ालिब रहा। (64) वह बोले ऐ मूसा (अ)! या तो (पहले अपना दाओ) डाल या हम पहले डालें। (65)

قَالَ عَلِمَهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَى (٥٢)								
52	और न वह भूलता है	मेरा रब	वह न ग़लती करता है	किताब में	मेरा रब	पास	उस का इल्म	उस ने कहा
الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَوَسَّلَكَ لَكُمُ فِيهَا سُبُلًا								
	राहें	उस में	तुम्हारे लिए	और चलाई	बिछौना	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया
وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتَّى (٥٣)								
53	मुख़्तलिफ़	सबज़ी	से	जोड़े (अक़्साम)	उस से	फिर हम ने निकाले	पानी	आस्मान से
كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِأُولِي النُّهَى (٥٤) مِنْهَا								
उस से	54	अक़ल वालों के लिए	निशानियां	उस में	बेशक	अपने मवेशी	और चराओ	तुम खाओ
خَلَقْنَاهُمْ وَفِيهَا نُعِيدُهُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى (٥٥) وَلَقَدْ آرَيْنَاهُ								
और हम ने उसे दिखाई	55	दूसरी बार	हम निकालेंगे तुम्हें	और उस से	हम लौटा देंगे तुम्हें	और उस में	हम ने तुम्हें पैदा किया	
اَيْنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَابَى (٥٦) قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا								
हमारी ज़मीन से		कि तू निकाल दे हमें	क्या तू आया हमारे पास	उस ने कहा	56	तो उस ने झुटलाया और इन्कार किया	तमाम	अपनी निशानियां
بِسِحْرِكَ يَمْؤُوسَى (٥٧) فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ								
और अपने दरमियान	हमारे दरमियान	पस मुक़र्रर कर	उस जैसा	एक जादू	पस ज़रूर हम तेरे मुक़ाबल लाएंगे	57	ऐ मूसा (अ)	अपने जादू के ज़रीए
مَوْعِدًا لَا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى (٥٨) قَالَ مَوْعِدُكُمْ								
तुम्हारा वादा	उस ने कहा	58	एक हमवार मैदान	तू	और न	हम	हम उस के खिलाफ़ न करें	एक वादा (वक़्त)
يَوْمَ الزَّيْنَةِ وَأَنْ يُحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى (٥٩) فَتَوَلَّى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ								
उस ने जमा किया	फिरअौन	फिर लौट गया	59	दिन चढ़े	लोग	जमा किए जाएं	और यह कि	ज़ीनत (मेले) का दिन
كَيِّدَهُ ثُمَّ أَتَى (٦٠) قَالَ لَهُمْ مُوسَى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا								
झूट	अल्लाह पर	न घड़ो	खराबी तुम पर	मूसा (अ)	उन से	उस ने कहा	60	फिर वह आया
فَيُسْحِتْكُمْ بِعَذَابٍ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَى (٦١) فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُمْ								
अपने काम में	तो वह झगड़ने लगे	61	जिस ने झूट बान्धा	और वह नामुराद हुआ	अज़ाब से	कि वह हलाक करदे तुम्हें		
بَيْنَهُمْ وَأَسْرُوا النَّجْوى (٦٢) قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرُنِ يُرِيدُنَ								
यह चाहते हैं	अलबत्ता जादूगर	यह दोनों	तहकीक़	वह कहने लगे	62	मशवरा	और उन्होंने ने छुप कर किया	बाहम
أَنْ يُخْرِجُكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَا بِطَرِيقَتِكُمُ الْمُثْلَى (٦٣)								
63	अच्छा	तुम्हारा तरीका	और वह लेजाएं	अपने जादू के ज़रीए	तुम्हारी सर ज़मीन	से	कि तुम्हें निकाल दें	
فَاجْمِعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ اتُّوْا صَفًّا وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَى (٦٤)								
64	ग़ालिब रहा	जो	आज	और तहकीक़ कामयाब होगा	सफ़ बान्ध कर	फिर तुम आओ	अपने दाओ	लिहाज़ा इकट्ठे कर लो तुम
قَالُوا يَمْؤُوسَى إِمَّا أَنْ تُلْقَى وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَى (٦٥)								
65	डालें	जो	पहले	यह कि हम हों	और या	यह कि तू डाले	या तो	ऐ मूसा (अ) वह बोले

قَالَ بَلْ أَلْقُوا فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ									
उन का जादू	से	उस के	खयाल में आई	और उन की लाठियां	उन की रससियां	तो नागहां	तुम डालो	बल्कि	उस ने कहा
أَنَّهُ تَسْعَى ٦٦ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَى ٦٧ قُلْنَا لَا تَخَفْ									
तुम डरो नहीं	हम ने कहा	67	मूसा (अ)	कुछ खौफ	अपने दिल में	तो पाया (महसूस किया)	66	दौड़ रही है	कि वह
إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ٦٨ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا إِنَّمَا									
वेशक	जा उन्होंने ने बनाया	वह निगल जाएगा	तुम्हारे दाएं हाथ में	जो	और डालो	68	गालिव	तुम ही	वेशक तुम
صَنَعُوا كَيْدَ سِحْرٍ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى ٦٩ فَأَلْقَى السَّحْرَةَ									
जादूगर	पस डाल दिए गए	69	वह आए	जहां (कहीं)	जादूगर	और कामयाब नहीं होगा	जादूगर	फरेव	उन्होंने ने बनाया
سَجَدًا قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَى ٧٠ قَالَ آمَنْتُمْ لَهُ قَبْلَ									
पहले	उस पर	तुम ईमान लाए	उस ने कहा	70	और मूसा (अ)	हारून (अ)	रब पर	हम ईमान लाए	वह बोले सिज्दे में
أَنْ أَذَنْ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَا قُطْعَنَ									
पस मैं ज़रूर काटूंगा	जादू	तुम्हें सिखाया	वह जिस ने	तुम्हारा बड़ा	वेशक वह	तुम्हें	कि मैं इजाज़त दूँ		
أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلَبَنَكُمْ فِي جُدُوعِ النَّخْلِ									
खजूर के तने	में-पर	और मैं तुम्हें ज़रूर सूली दूँगा	दूसरी तरफ से	और तुम्हारे पाऊँ	तुम्हारे हाथ				
وَلَتَعْلَمَنَّ أَيُّنَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَى ٧١ قَالُوا لَنْ نُؤْثِرَكَ عَلَى									
पर	हम हरगिज़ तुझे तरजीह न देंगे	उन्होंने ने कहा	71	और ता देर रहने वाला	अज़ाब में	ज़ियादा सख्त	हम में कौन	और तुम खूब जान लोगे	
مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ									
करने वाला	तू	जो	पस तू कर गुज़र	और वह जिस ने हमें पैदा किया	वाज़ेह दलाइल से	जो हमारे पास आए			
إِنَّمَا تَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ٧٢ إِنَّا آمَنَّا بِرَبِّنَا لِنَغْفِرَ لَنَا									
कि वह बख्शदे हमें	अपने रब पर	वेशक हम ईमान लाए	72	दुनिया की ज़िन्दगी	इस	तू करे गा	उस के सिवा नहीं		
خَطِينًا وَمَا أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ٧٣									
73	बेहतर और हमेशा बाकी रहने वाला	और अल्लाह	जादू	से	उस पर	तू ने हमें मजबूर किया	और जो	हमारी ख़ताएं	
إِنَّهُ مِنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا									
उस में	न वह मरेगा	जहन्नम	उस के लिए	तो वेशक	मुज़रिम बन कर	अपने रब के सामने	जो आया	वेशक वह	
وَلَا يَحْيَى ٧٤ وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ									
पस यही लोग	अच्छे	उस ने अमल किए	मोमिन बन कर	उस के पास आया	और जो	74	और न जिएगा		
لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَى ٧٥ جَنَّاتٌ عَذْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا									
उन के नीचे	जारी है	हमेशा रहने वाले	वागात	75	बुलन्द	दरजे	उन के लिए		
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَٰلِكَ جَزَاؤُ مَنْ تَزَكَّى ٧٦									
76	जो पाक हुआ	जज़ा है	और यह	उस में	हमेशा रहेंगे	नहरें			

उस ने कहा (नहीं) बल्कि तुम डालो, तो नागहां उन की रससियां और उन की लाठियां उस (मूसा अ) के खयाल में आई (ऐसे नमूदार हुईं) उन के जादू से कि गोया वह दौड़ रही है। (66)

तो मूसा (अ) ने अपने दिल में कुछ खौफ महसूस किया। (67) हम ने कहा तुम डरो नहीं, वेशक तुम ही गालिव रहोगे। (68) और जो तुम्हारे दाएं हाथ में है डालो वह निगल जाएगा जो कुछ उन्होंने ने बनाया है, वेशक (जो कुछ) उन्होंने ने बनाया है वह जादूगर का फरेव है, और जादूगर किसी शान से आए वह कामयाब नहीं होता। (69)

पस जादूगर सिज्दे में डाल दिए गए (गिर पड़े) वह बोले हम हारून (अ) और मूसा (अ) के रब पर ईमान लाए। (70)

फिरऔन ने कहा तुम उस पर ईमान ले आए (इस से) पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ, वेशक वह (मूसा अ) तुम्हारा बड़ा है जिस ने तुम्हें जादू सिखाया है, पस मैं ज़रूर काट डालूंगा तुम्हारे हाथ पाऊँ (जानिव) खिलाफ से (एक तरफ का हाथ दूसरी तरफ का पाऊँ) और मैं ज़रूर तुम्हें खजूर के तनों पर सूली दूँगा, और तुम खूब जान लोगे कि हम दोनों में से किस का अज़ाब ज़ियादा सख्त और देर पा है। (71)

उन्होंने ने कहा हम तुझे हरगिज़ तरजीह न देंगे उन वाज़ेह दलाइल से जो हमारे पास आए हैं और उस पर जिस ने हमें पैदा किया है, पस तू कर गुज़र जो तू करने वाला है, उस के सिवा नहीं कि तू (सिर्फ) इस दुनिया की ज़िन्दगी में करेगा। (72)

वेशक हम अपने रब पर ईमान लाए कि वह हमारी ख़ताएं बख्शदे और उस पर जो तू ने हमें जादू के लिए मजबूर किया, और अल्लाह बेहतर है और हमेशा बाकी रहने वाला है। (73)

वेशक वह, जो अपने रब के सामने आया मुज़रिम बन कर तो वेशक उस के लिए जहन्नम है, न वह उस में मरेगा और न जिएगा। (74)

और जो उस के पास मोमिन बन कर आया और उस ने अच्छे अमल किए, पस यही लोग हैं जिन के लिए दरजे बुलन्द हैं। (75)

हमेशा रहने वाले बागात, जारी हैं उन के नीचे नहरें, उन में हमेशा रहेंगे, और यह जज़ा है (उस की) जो पाक हुआ। (76)

और तहकीक हम ने वहि की मूसा (अ) को कि रातों रात मेरे बन्दों को (निकाल) ले जा, उन के लिए दर्या में (असा मार कर) खश्क रास्ता बना लेना, न तुझे पकड़ने का खौफ होगा और न (गर्क होने का) डर होगा। (77)

फिर फिरऔन ने अपने लशकर के साथ उन का पीछा किया तो उन्हें दर्या (की मौजों) ने ढांप लिया, जैसा कि ढांप लिया (विलकुल गर्क कर दिया)। (78)

और फिरऔन ने अपनी कौम को गुमराह किया और हिदायत न दी। (79)

ऐ बनी इस्राईल (औलादे याकूब)! तहकीक हम ने तुम्हारे दुश्मन से तुम्हें नजात दी और कोहे तूर के दाएं जानिब तुम से (तौरेत अता करने का) वादा किया और हम ने तुम पर उतारा “मन्न” और “सलवा”। (80)

जो हम ने तुम्हें दिया उस में से पाकीज़ा चीज़े खाओ, और उस में सरकशी न करो कि तुम पर उतरे मेरा ग़ज़ब, और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह नीस्त ओ नाबूद हुआ। (81)

और वेशक मैं बड़ा बख़्शने वाला हूँ उस को जिस ने तौबा की, और वह ईमान लाया और उस ने अमल किया नेक, फिर हिदायत पर रहा। (82)

और ऐ मूसा (अ)! और क्या चीज़ तुझे अपनी कौम से जल्द लाई (क्यों जल्दी की)? (83)

उस ने कहा वह मेरे पीछे (आ ही रहे) हैं, मैं ने तेरी तरफ़ (आने में) जल्दी की ताकि तू राज़ी हो। (84)

उस ने कहा पस हम ने तहकीक तेरी कौम को आजमाइश में डाला, और उन्हें सामरी ने गुमराह किया। (85)

पस मूसा (अ) अपनी कौम की तरफ़ लौटे, गुस्से में भरे हुए, अफ़सोस करते हुए, कहा ऐ मेरी कौम! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या तबील हो गई तुम पर (मेरी जुदाई की) मुदत? या तुम ने चाहा कि तुम पर तुम्हारे रब का ग़ज़ब उतरे? फिर तुम ने खिलाफ़ किया मेरे वादे के (वादा खिलाफी की)। (86)

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي فَاصْرُبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَا تَخَفْ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ (٧٧)							
पस बना लेना	मेरे बन्दे	कि रातों रात लेजा	मूसा (अ)	तरफ-को	और तहकीक हम ने वहि की		
77	और न डर	पकड़ना	खौफ होगा	न	खश्क	दर्या में	रास्ता
فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ (٧٨)							
78	जैसा कि उन को ढांप लिया	दर्या से	उन्हें ढांप लिया	अपने लशकर के साथ	फिरऔन	फिर उन का पीछा किया	
وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ (٧٩) يَبْنِي إِسْرَءِيلَ قَدْ أَنْجَيْنَاكَ مِّنْ عَذُوبِكُمْ وَوَعَدْنَاكَ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْمَنَّاءَ وَالسَّلْوىٰ (٨٠) كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي وَمَنْ يَحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ (٨١) وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ (٨٢) وَمَا أَعْجَلَكَ عَنِ قَوْمِكَ يَمُوسَىٰ (٨٣) قَالَ هُمْ أَوْلَاءُ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضَىٰ (٨٤) قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ (٨٥) فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ يَقَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعَدًّا حَسَنًا أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدْتُمْ أَنْ يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِي (٨٦)							
तहकीक	ऐ बनी इस्राईल	79	और न हिदायत दी	अपनी कौम	फिरऔन	और गुमराह किया	
दाएं	कोहे तूर	जानिब	और हम ने तुम से वादा किया	तुम्हारा दुश्मन	से	हम ने तुम्हें नजात दी	
पाकीज़ा चीज़ें	से	तुम खाओ	80	और सलवा	मन्न	तुम पर	और हम ने उतारा
और जो	मेरा ग़ज़ब	तुम पर	कि उतरेगा	उस में	और न सरकशी करो	जो हम ने तुम्हें दिया	
उस को जो	बड़ा बख़्शने वाला	और वेशक मैं	81	तो वह गिरा (नीस्त ओ नाबूद हुआ)	मेरा ग़ज़ब	उस पर	उतरा
तुझे जल्द लाई	और क्या (चीज़)	82	हिदायत पर रहा	फिर	नेक	और उस ने अमल किया	और वह ईमान लाया
मेरे पीछे	यह है	वह	उस ने कहा	83	ऐ मूसा (अ)	अपनी कौम से	
आज़माइश में डाला	तहकीक	पस हम ने	उस ने कहा	84	ताकि तू राज़ी हो	ऐ मेरे रब	और मैं ने जल्दी की
पस लौटा	85	सामरी	और उन्हें गुमराह किया		तेरे बाद	तेरी कौम	
क्या तुम से वादा नहीं किया था	ऐ मेरी कौम	उस ने कहा	अफ़सोस करता	गुस्से में भरा हुआ	अपनी कौम की तरफ़	मूसा (अ)	
या तुम ने चाहा	मुदत	तुम पर	क्या तबील हो गई	अच्छा वादा		तुम्हारा रब	
86	मेरा वादा	फिर तुम ने खिलाफ किया	तुम्हारा रब	से-का	ग़ज़ब	तुम पर	कि उतरे

قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلَكِنَا وَلَكِنَّا حُمِلْنَا أَوْزَارًا مِّنْ							
से-का	बोझ	हम पर लादा गया	और लेकिन (बल्कि)	अपने इख्तियार से	तुम्हारा वादा	हम ने खिलाफ नहीं किया	वह बोले
زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنَاهَا فَكَذَلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ (٨٧) فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا							
एक बछड़ा	उन के लिए	फिर उस ने निकाला	87	सामरी	डाला	फिर उसी तरह	तो हम ने उसे डाल दिया
جَسَدًا لَهُ خُورٌ فَقَالُوا هَذَا إِلَهُكُمْ وَإِلَهُ مُوسَىٰ ۖ فَانْصَرَفَ (٨٨)							
88	फिर वह भूल गया	मूसा (अ)	और माबूद	तुम्हारा माबूद	यह	फिर उन्होंने ने कहा	गाय की आवाज़
أَفَلَا يَرَوْنَ إِلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا ۖ وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ صَرًّا وَلَا نَفْعًا (٨٩)							
89	और न नफा	नुक्सान	उन के	और इख्तियार नहीं रखता	वात (जवाब)	उन की तरफ	कि वह नहीं फेरता
وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هُرُوءٌ مِّنْ قَبْلُ يَقَوْمُ إِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهِ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي (٩٠) قَالُوا لَنْ نَّبْرَحَ							
और बेशक	इस से	तुम आजमाए गए	इस के सिवा नहीं	ऐ मेरी कौम	उस से पहले	हारून (अ)	उन से
هَمَّ هَرَجِيْزٌ جُودًا نَّهْنُوْا ۖ قَالُوا لَنْ نَّبْرَحَ (٩١) عَلَيْهِ عَكْفِيْنَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ (٩٢) قَالَ يَهُرُوءُ							
हम हरगिज़ जुदा न होंगे	उन्होंने ने कहा	90	मेरी बात	और इताअत करो (मानो)	सो मेरी पैरवी करो	रहमान है	तुम्हारा रब
مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوا (٩٣) أَلَّا تَتَّبِعَنِ أَفَعَصَيْتَ أَمْرِي (٩٤) قَالُوا لَنْ نَّبْرَحَ							
93	मेरा यह हुक्म	तो क्या तू ने नाफरमानी की	कि तू न मेरी पैरवी करे	92	वह गुमराह हो गए	तू ने देखा उन्हें	जब
قَالَ يَبْنَؤُمْ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۖ إِنِّي خَشِيتُ							
डरा	बेशक मैं	और न सर से	मुझे दाढ़ी से	न पकड़ें	ऐ मेरे माँ जाए	उस ने कहा	
أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي (٩٥) قَالُوا لَنْ نَّبْرَحَ							
उस ने कहा	94	मेरी बात	और न खयाल रखा	बनी इस्राईल	दरमियान	तू ने तफ़्फ़ीका डाल दिया	कि तुम कहोगे
فَمَا خَطْبُكَ يَسَامِرِيُّ (٩٦) قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ							
उस को	उन्होंने ने न देखा	वह जो कि	मैं ने देखा	वह बोला	95	ऐ सामरी	तेरा हाल
لِي نَفْسِي (٩٧) قَالَ فَادْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَاةِ أَنْ تَقُولَ لَا							
न	तू कहे	कि	ज़िन्दगी में	बेशक तेरे लिए	पस तू जा	उस ने कहा	96
مِسَاسٍ ۚ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهُ ۖ وَانْظُرْ إِلَى إِلْهِكَ الَّذِي							
वह जिस	अपने माबूद	तरफ	और देख	हरगिज़ तुझ से खिलाफ न होगा	एक वक़्त मुक़र्रर	तेरे लिए	और बेशक
ظَلَّتْ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا (٩٧)							
97	उड़ा कर	दर्या में	फिर अलबत्ता उसे बिखेर देंगे	हम उसे अलबत्ता जलाएंगे	जमा हुआ	उस पर	तू रहता था

वह बोले हम ने अपने इख्तियार से तुम्हारे वादे के खिलाफ नहीं किया, बल्कि हम पर बोझ लादा गया कौम के ज़ेवर का, तो हम ने उसे (आग में) डाल दिया, फिर उसी तरह सामरी ने डाला। (87) फिर उस ने उन के लिए एक बछड़ा निकाला (बनाया), एक मूर्ति जिस में गाय की आवाज़ निकलती थी, फिर उन्होंने ने कहा यह तुम्हारा माबूद है, और मूसा (अ) का माबूद है, वह (मूसा अ) तो भूल गया है। (88) भला क्या वह नहीं देखते? कि वह (बछड़ा) उन की तरफ़ वात नहीं फेरता (उन को जवाब नहीं देता) न उन के नुक्सान का इख्तियार रखता है और न नफा का। (89) और तहकीक़ उन से हारून (अ) ने उस से पहले कहा था कि ऐ मेरी कौम! इस के सिवा नहीं कि तुम इस से आजमाए गए हो और बेशक तुम्हारा रब रहमान है, सो मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। (90) उन्होंने ने कहा हम हरगिज़ उस से जुदा न होंगे जमे हुए (बैठे रहेंगे) यहां तक कि मूसा (अ) हमारी तरफ़ लौटे। (91) उस (मूसा अ) ने कहा ऐ हारून (अ)! तुझे किस चीज़ ने रोका जब तू ने देखा कि वह गुमराह हो गए हैं। (92) कि तू न मेरी पैरवी करे? तो क्या तू ने नाफरमानी की मेरे हुक्म की? (93) उस ने कहा ऐ मेरे माँ जाए! मुझे दाढ़ी से और न सर (के बालों) से पकड़ें, बेशक मैं डरा कि तुम कहोगे कि तू ने फोट डाल दिया बनी इस्राईल के दरमियान, और मेरी बात का खयाल न रखा। (94) (फिर मूसा अ ने सामरी से) कहा ऐ सामरी! तेरा क्या हाल है? (95) वह बोला मैं ने वह देखा जिस को उन्होंने ने नहीं देखा, पस मैं ने रसूल के नक़्शे क़दम से एक मुट्ठी भर ली तो मैं ने वह (बछड़े के क़ालिब में) डाल दी और इसी तरह मेरे नफ़्स ने मुझे फुसलाया। (96) मूसा (अ) ने कहा पस तू जा, बेशक तेरे लिए ज़िन्दगी में (यह सज़ा) है कि तू कहता फिर: न छूना मुझे, और बेशक तेरे लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, हरगिज़ तुझ से खिलाफ़ न होगा (न टलेगा), और अपने माबूद की तरफ़ देख जिस पर तू (बैठा) रहता था जमा हुआ, हम उसे अलबत्ता जला देंगे फिर इस (की राख) उड़ा कर दर्या में ज़रूर बिखेर देंगे। (97)

इस के सिवा नहीं कि तुम्हारा माबूद अल्लाह है, वह जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, उस का इल्म हर शौ पर मुहीत है। (98) उसी तरह हम तुम से (वह) अहवाल बयान करते हैं जो गुज़र चुके, और तहकीक हम ने तुम्हें अपने पास से किताबे नसीहत (कुरआन) दिया। (99) जिस ने उस से मुँह फेरा वह वेशक लादेगा क़ियामत के दिन भारी बोझ। (100) वह उस में हमेशा रहेंगे, और बुरा है उन के लिए क़ियामत के दिन का बोझ। (101) जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी, और हम मुज्रीमों को इकटठा करेंगे उस दिन (उन की) आँखें नीली (वे नूर होंगी)। (102) आपस में आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे तुम (दुनिया में) सिर्फ़ दस दिन रहे हो। (103) वह जो कहते हैं हम खूब जानते हैं जब उन का सब से अच्छी राह वाला (होशमन्द) कहेगा तुम सिर्फ़ एक दिन रहे हो। (104) और वह आप (स) से पहाड़ों के बारे में दर्याफ्त करते हैं, तो आप (स) कह दें मेरा रब उन्हें उड़ा कर बिखेर देगा। (105) फिर उसे (ज़मीन को) एक हमवार मैदान कर छोड़ेगा। (106) और तू न देखेगा उस में कोई कजी (नाहमवारी) और न कोई बुलन्दी। (107) उस दिन सब पीछे चलेंगे एक पुकारने वाले के, उस के लिए कोई कजी न होगी और अल्लाह के सामने आवाज़ें पस्त हो जाएंगी, वस तू सिर्फ़ पस्त आवाज़ सुनेगा। (108) उस दिन कोई शफ़ाअत नफ़ा न देगी मगर जिस को अल्लाह इजाज़त दे, और उस की बात पसंद करे। (109) वह जानता है जो कुछ उन के आगे और उन के पीछे है, और वह (अपने इल्म में) उस का एहाता नहीं कर सकते। (110) और चेहरे झुक जाएंगे “हैय ओ क्यूम” (ज़िन्दा क़ाइम) के सामने, और नामुराद हुआ वह जिस ने जुल्म का बोझ उठाया। (111) और जो कोई नेकी करे, वशर्त यह कि वह मोमिन हो तो न उसे किसी जुल्म का ख़ौफ़ होगा और न किसी नुक़सान का। (112) और उसी तरह हम ने उस पर कुरआन नाज़िल किया अरबी में और हम ने उस में तरह तरह से डरावे बयान किए ताकि वह परहेज़गार हो जाएं या वह उन के लिए कोई नसीहत पैदा कर दे। (113)

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿٩٨﴾										
98	इल्म	हर शौ	वसीअ (मुहीत है)	उस के सिवा	कोई माबूद नहीं	वह जो	अल्लाह	तुम्हारा माबूद	इस के सिवा नहीं	
كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ آتَيْنَكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ﴿٩٩﴾ مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾ خَلِيدِينَ										
अपने पास से	और तहकीक हम ने तुम्हें दिया	गुज़र चुका	जो	खबरें अहवाल	से	तुझ पर-से	हम बयान करते हैं	इसी तरह		
वह हमेशा रहेंगे	100	(भारी) बोझ	क़ियामत के दिन	लादेगा	तो वेशक वह	उस से	मुँह फेरा	जिस	99	(किताबे) नसीहत
فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ﴿١٠٢﴾ يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ﴿١٠٥﴾ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ										
और हम इकटठा करेंगे	सूर में	फूंक मारी जाएगी	जिस दिन	101	बोझ	क़ियामत के दिन	उन के लिए	और बुरा है	उस में	
मगर (सिर्फ़)	तुम रहे	नहीं	आपस में	आहिस्ता आहिस्ता कहेंगे	102	नीली आँखें	उस दिन	मुज्रीमों को		
يَوْمَئِذٍ فَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾ لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ﴿١٠٧﴾ يَوْمَئِذٍ										
उस दिन	107	कोई बुलन्दी	और न	कोई कजी	उस में	न देखेगा तू	106	एक हमवार	मैदान	फिर उसे छोड़ देगा
يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ										
रहमान के लिए (सामने)	आवाज़ें	और पस्त हो जाएंगी	उस के लिए	नहीं कोई कजी	एक पुकारने वाला	वह सब पीछे चलेंगे				
فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾ يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ										
इजाज़त दे उस को	जिस	मगर	कोई शफ़ाअत	न नफ़ा देगी	उस दिन	108	आहिस्ता आवाज़	मगर (सिर्फ़)	वस तू न सुनेगा	
الرَّحْمَنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ										
उन के पीछे	और जो	उन के हाथों के दरमियान (आगे)	जो	वह जानता है	109	वात	उस की	और पसन्द करे	रहमान	
وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١٠﴾ وَعَنْتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ										
“क्यूम”	सामने “हैय”	चेहरे	झुक जाएंगे	110	इल्म के अन्दर	उस का	और वह अहाता नहीं कर सकते			
وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ										
मोमिन	और वह	नेकी	से-कोई	करे	और जो	111	जुल्म	बोझ उठाया	जो-जिस	और नामुराद हुआ
فَلَا يَخُفُّ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا										
अरबी	कुरआन	हम ने उस पर नाज़िल किया	और उसी तरह	112	और न किसी नुक़सान का	किसी जुल्म का	तो न उसे ख़ौफ़ होगा			
وَصَرَفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾										
113	कोई नसीहत	उन के लिए	या वह पैदा करदे	परहेज़गार हो जाएं	ताकि वह	डरावे	से	और हम ने तरह तरह से बयान किए उस में		

7
15

فَتَعْلَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۝۱۱۴ وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝۱۱۵ وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الْكَافِرِينَ ۝۱۱۶ فَتَلَوْنَهَا فَتَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَأُتِيَا الْخُلْدَ وَمَلِكُ لَا يَبْلَىٰ ۝۱۲۰ فَكَانَ مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوَاتِلُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ ذُرِّيِّ الْجَنَّةِ وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ ۝۱۲۱ ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ۝۱۲۲ قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۝۱۲۳ فَامَّا يَاتِيَنَّكُمْ مِّنِّي هُدًى ۝۱۲۴ فَمَنْ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ۝۱۲۵ وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۝۱۲۶							
कि	इस से कब्ल	कुरआन में	जल्दी करो	और न	सच्चा	बादशाह	सो बुलन्द ओ वरतर है अल्लाह
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝۱۱۴ وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الْكَافِرِينَ ۝۱۱۵ وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الْكَافِرِينَ ۝۱۱६							
और हम ने हुक्म भेजा	114	इल्म	ज़ियादा दे मुझे	ऐ मेरे रब	और कहिए	उस की वहि	तुम्हारी तरफ़
फ़रिश्तों को	और (याद करो) जब हम ने कहा	115	पुख़्ता इरादा	उस में	और हम ने न पाया	तो वह भूल गया	आदम की तरफ़
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝۱१६							
वेशक यह	ऐ आदम (अ)	पस हम ने कहा	116	उस ने इन्कार किया	इवलीस	सिवाए	तो सब ने सिज्दा किया
वेशक	117	फिर तुम मुसीबत में पड़ जाओ	जन्नत से	न निकलवा दे	सो तुम्हें	और तुम्हारी बीबी का	तुम्हारा दुश्मन
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝११९							
और न धूप में रहोगे	119	इस में	प्यासे रहोगे	न	और यह कि तुम	118	नंगे और न इस में
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝१२०							
दरख़्त	पर	मैं तेरी रहनुमाई करूँ	क्या	ऐ आदम (अ)	उस ने कहा	शैतान	उस की तरफ़ (दिल में)
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝१२०							
उन की शर्मगाहें	उन पर	तो ज़ाहिर होगई	उस से	पस दोनों ने ख़ाया	120	न पुरानी हो (जवाल पज़ीर न हो)	और हमेशगी
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝१२१							
अपना रब	आदम (अ)	और नाफ़रमानी की	जन्नत के पत्ते	से	अपने ऊपर	और वह दोनों लगे जोड़ने (ढांपने)	
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ आदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ۝१२१							
तुम दोनों उतर जाओ	फ़रमाया	122	और उसे राह दिखाई	उस पर	तबज्जुह फ़रमाई	उस का रब	उस को चुन लिया
وَلَقَدْ عَهِदْنَا إِلَىٰ आदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ नُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ॥१२२							
हिदायत	मेरी तरफ़ से	तुम्हारे पास आए	पस अगर	दुश्मन	बाज़ के	तुम में से बाज़	यहां से
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ आदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ॥१२३							
मुँह मोड़ा	और जिस	123	बदबख़्त होगा	और न	तो न वह गुमराह होगा	मेरी हिदायत	पैरवी की
وَلَقَدْ عَهِदْنَا إِلَىٰ आदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ नُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْजُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ॥१२४							
क़ियामत के दिन	और हम उसे उठाएंगे	तंग	गुज़रान	उस के लिए	तो वेशक	मेरे ज़िक्र-नसीहत	से
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ आदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ नُنْزِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ॥१२५							
125	वीना-देखता	और मैं तो था	अन्धा	तू ने मुझे क्यों उठाया	ऐ मेरे रब	वह कहेगा	124
وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ आदَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ नُنْजِلَ لَهُ الْوَحْيَ أَنْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآदَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ ॥१२६							
126	हम तुझे भुला देंगे	आज	और इसी तरह	तो तू ने उन्हें भुला दिया	हमारी आयात	तेरे पास आई	इसी तरह वह फ़रमाएगा

सो अल्लाह बुलन्द ओ वरतर है सच्चा बादशाह, और तुम कुरआन (पढ़ने) में जल्दी न करो, इस से कब्ल के तुम्हारी तरफ़ पूरी की जाए उस की वहि, और कहिए ऐ मेरे रब! मुझे और ज़ियादा इल्म दे। (114) और हम ने उस से कब्ल आदम (अ) की तरफ़ हुक्म भेजा तो वह भूल गया और हम ने उस में पुख़्ता इरादा न पाया। (115) और याद करो जब हम ने फ़रिश्तों से कहा तुम आदम (अ) को सिज्दा करो तो सब ने सिज्दा किया सिवाए इवलीस के, उस ने इन्कार किया। (116) पस हम ने कहा ऐ आदम (अ)! वेशक यह तुम्हारा और तुम्हारी बीबी का दुश्मन है। सो तुम्हें निकलवा न दे जन्नत से, फिर तुम तकलीफ़ में पड़ जाओ। (117) वेशक तुम्हारे लिए (जन्नत में) यह है कि इस में न भूके रहो, न नंगे। (118) और यह कि तुम न प्यासे रहोगे और न धूप में तपोगे। (119) फिर शैतान ने उस के दिल में वस्वसा डाला, उस ने कहा ऐ आदम (अ)! क्या मैं तेरी रहनुमाई करूँ हमेशगी के दरख़्त पर? और वह बादशाहत जो ज़वाल पज़ीर न हो? (120) पस उन दोनों ने उसे खा लिया तो उन पर उन की शर्मगाहें ज़ाहिर हो गईं, और अपने (जिस्म के) ऊपर जन्नत के पत्तों से ढांपने लगे, और आदम (अ) ने अपने रब की नाफ़रमानी की तो वह बहक गया। (121) फिर उस को चुन लिया उस के रब ने, फिर उस पर (रहमत से) तबज्जुह फ़रमाई (तौबा कुबूल की) और उसे राह दिखाई। (122) फ़रमाया तुम दोनों यहां से उतर जाओ, तुम्हारी (औलाद में से) बाज़ बाज़ के दुश्मन होंगे, पस अगर (जब भी) मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास मेरी हिदायत आए तो जिस ने मेरी हिदायत की पैरवी की वह न गुमराह होगा और न बदबख़्त होगा। (123) और जिस ने मेरे ज़िक्र (नसीहत) से मुँह मोड़ा तो वेशक उस की मईशत (गुज़रान) तंग होगी और हम उसे उठाएंगे क़ियामत के दिन अन्धा। (124) वह कहेगा, ऐ मेरे रब! तू ने मुझे अन्धा क्यों उठाया? मैं तो (दुनिया में) वीना (देखता) था। (125) वह फ़रमाएगा इसी तरह तेरे पास हमारी आयात आई तो तू ने उन्हें भुलाया, और इसी तरह आज हम तुझे भुला देंगे। (126)

और इसी तरह हम (उस को) बदला देते हैं जो हद से निकल जाए और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए, और अलबत्ता आखिरत का अज़ाब शदीद तरीन है और ज़ियादा देर तक रहने वाला है। (127) क्या (उस हकीकत ने भी) उन्हें हिदायत न दी कि उन से क़व्ल हम ने कितनी ही जमाअतें हलाक कर दी, वह चलते फिरते हैं उन के मसाकिन में, अलबत्ता बेशक उस में अक़ल वालों के लिए निशानियां हैं। (128) और अगर तुम्हारे रब की (तरफ़) से एक बात (तै) न हो चुकी होती और मीज़ाद मुक़र्रर (न होती) तो अज़ाब ज़रूर (नाज़िल) हो जाता। (129) पस वह जो कहते हैं उस पर सब्र करें, तारीफ़ के साथ अपने रब की तस्वीह करें, (पाकीज़गी) बयान करें तुलूअ-ए-आफ़ताब से पहले, और गुरुबे आफ़ताब से पहले, और कुछ रात की घड़ियों में, पस उस की तस्वीह करें, और किनारे दिन के (दोपहर जुहर के वक़्त) ताकि तुम खुश हो जाओ। (130) और अपनी आँखें (उन चीज़ों की) तरफ़ न फ़ैलाना जो हम ने बरतने को दी हैं उन के जोड़ों को, दुनिया की ज़िन्दगी की आराइश ओ ज़ेबाइश (बना कर) ताकि हम उस में उन्हें आजमाएँ, और तेरे रब का अतिया बेहतर है और सब से ज़ियादा तादेर रहने वाला है। (131) और तुम अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, और उस पर काइम रहो, हम तुझ से नहीं मांगते रिज़्क (बल्कि) हम तुझे रिज़्क देते हैं और अन्जाम (बख़ैर) अहले तक्वा के लिए है। (132) और वह कहते हैं हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाए अपने रब की तरफ़ से, क्या उन के पास (वह) वाज़ेह निशानी नहीं आई जो पहले सहीफ़ों में है। (133) और अगर हम उन्हें हलाक कर देते (रसूलों के) आने से क़व्ल किसी अज़ाब से तो वह कहते ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ कोई रसूल क्यों न भेजा? तो हम इस से क़व्ल कि ज़लील और रुस्वा हों हम तेरे अहकाम की पैरवी करते। (134) आप (स) कह दें, सब मुन्तज़िर हैं, पस तुम (अभी) इन्तिज़ार करो, सो अनक़रीब तुम जान लोगे, कौन हैं सीधे रास्ते वाले और कौन है जिस ने हिदायत पाई। (135)

وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِآيَاتِ رَبِّهِ وَلَعَذَابُ							
और अलबत्ता अज़ाब	अपना रब	आयतों पर	और न ईमान लाए	हद से निकल जाए	जो	हम बदला देते हैं	और इसी तरह
الْآخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقَى (١٢٧) أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ							
उन से क़व्ल	हम ने हलाक कर दी	कितनी ही	उन्हें	क्या हिदायत न दी	127	और ज़ियादा देर तक रहने वाला है	शदीद तरीन आखिरत
مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْكِنِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّأُولِي النُّهَى (١٢٨)							
128	अक़ल वालों के लिए	अलबत्ता निशानियां हैं	उस	में	बेशक	उन के मसाकिन में	वह चलते फिरते हैं कौम-जमाअतें
وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزِمًا وَآجَلٌ مُّسَمًّى (١٢٩)							
129	मुक़र्रर	और मीज़ाद	अज़ाब	तो ज़रूर आजाता	तुम्हारा रब	से	हो चुकी एक बात और अगर न
فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ							
तुलूअे आफ़ताब	पहले	अपना रब	तारीफ़ के साथ	और तस्वीह करें	जो वह कहते हैं	पर	पस सब्र करें
وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ آنَايِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ							
दिन	और किनारे	पस तस्वीह करें	रात की घड़ियां	और कुछ	उस के गुरुब	और पहले	
لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ (١٣٠) وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا							
जोड़ें	उस से	जो हम ने बरतने को दिया	तरफ़	अपनी आँखें	और न फ़ैलाना	130	खुश हो जाओ ताकि तुम
مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَفْثِنَهُمْ فِيهِ وَرِزْقُ رَبِّكَ							
तेरा रब	और अतिया	उस में	ताकि हम उन्हें आजमाएँ	दुनिया की ज़िन्दगी	आराइश	उन से-के	
خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ (١٣١) وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا							
उस पर	और काइम रहो	नमाज़ का	अपने घर वाले	और हुक्म दो तुम	131	और तादेर रहने वाला	बेहतर
لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ (١٣٢) وَقَالُوا							
और वह कहते हैं	132	अहले तक्वा के लिए	और अन्जाम	तुझे रिज़्क देते हैं	हम	रिज़्क	हम तुझ से नहीं मांगते
لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِّنْ رَبِّهِ أَوَلَمْ تَأْتِهِم بَيِّنَةٌ مَا فِي الصُّحُفِ							
सहीफ़े	में	जो	वाज़ेह निशानी	उन के पास नहीं आई	क्या	अपना रब	से कोई निशानी क्यों नहीं लाते
الْأُولَىٰ (١٣٣) وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِّن قَبْلِهِ لَقَالُوا							
तो वह कहते	इस से क़व्ल	किसी अज़ाब से	उन्हें हलाक कर देते	हम	और अगर	133	पहले
رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ آيَاتِكَ مِنْ قَبْلِ							
इस से क़व्ल	तेरे अहकाम	तो हम पैरवी करते	कोई रसूल	हमारी तरफ़	क्यों तू ने न भेजा	ऐ हमारे रब	
أَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزَىٰ (١٣٤) قُلْ كُلُّ مُتَرَبِّصٍ فَتَرَبَّصُوا							
पस तुम इन्तिज़ार करो	मुन्तज़िर है	सब	कह दें	134	और हम रुस्वा हों	कि हम ज़लील हों	
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ (١٣٥)							
135	उस ने हिदायत पाई	और कौन	सीधा	रास्ता	वाले	कौन	सो अनक़रीब तुम जान लोगे

ع ١٦

ع ١٦